

# Tattwa Ki Baat - 1

Date : 15th February 1981  
Place : Delhi  
Type : Public Program  
Speech : Hindi  
Language

## CONTENTS

### I Transcript

Hindi	02 - 18
English	-
Marathi	-

### II Translation

English	-
Hindi	-
Marathi	19 - 30

# ORIGINAL TRANSCRIPT

## HINDI TALK

Scanned from Hindii Chaitanya Lahiri

कल मैंने आपसे कहा था कि,.....

आज आपको तत्व की बात बतायेंगे। जब हम एक पेड़ की ओर देखें और उसका उन्नतिगत होना, उसका बढ़ना देखें, तो यह समझ में आता है कि उसके अन्दर कोई न कोई ऐसी शक्ति प्रवाहित है या प्रभावित है जिसके कारण वो पेड़ बढ़ रहा है और अपनी पूरी स्थिति को पहुँच रहा है। यह शक्ति उसके अन्दर है नहीं तो यह कार्य नहीं हो सकता। लेकिन यह शक्ति उसने कहाँ से पाई ? इसका तत्व मर्म क्या है ? जो चीज बाह्य में दिखाई देती है, जैसे कि पेड़ दिखाई देता है, उसके फल, फूल, पत्ते सब दिखाई देते हैं, ये तो कोई तत्व नहीं। इस तत्व पर तो यह चीज आधारित नहीं। वो चीज कोई न कोई इससे सूक्ष्म है। उस सूक्ष्म को तो हम देख नहीं पाये, उसकी यदि साकार स्थिति होती तो दिख जाता लेकिन वो निराकार स्थिति में है, माने कि उसके अन्दर चलता हुआ पानी है, वो भी उसका तत्व नहीं हुआ, हालांकि वहन कर रहा है। पानी ही उस शक्ति को अपने अन्दर से वहन कर रहा है। याने अगर पानी ही तत्व है तो पत्थर में पानी डालने से, वहाँ कोई पेड़ तो नहीं निकल आते। तब तत्व में जानना चाहिए कि हर चीज़ का अपना-अपना तत्व है। पानी का अपना तत्व है, पेड़ का अपना तत्व है और पत्थर का भी अपना तत्व है। उसी तरह मानव का भी अपना एक तत्व है, principle (सिद्धांत) है, जिसके बूते पर वो चल रहा है, बढ़ा हो रहा है, उससे उसकी उद्देश्य प्राप्ति होती है।

ये तत्व एक हो नहीं सकते। जैसे कि मैंने बताया कि पानी के तत्व से ही अगर, पौधा निकल रहा है तो एक पत्थर से पौधा क्यों नहीं निकलता। अगर बीज/पानी के तत्व से बीज पनप रहा है तो वो धरती माता की शरण क्यों जाता

है ? अगर धरती माता की वजह से ही सारा कार्य हो रहा है तो धरती माता की वजह से यह जो पत्थर है वो क्यों नहीं पनपता ? इसका मतलब यह है कि अनेक तत्वों में एक तत्व है, लेकिन तत्व अनेक हैं।

ये सब अनेक तत्व जो हैं वो एक में समाये हैं और यह जो अनेक तत्व हैं यह हमारे अन्दर भी स्थित हैं, अलग अलग चक्रों पर इनका वास है, लेकिन एक ही शरीर में समाये हैं और एक ही ओर इनका कार्य चल रहा है, और एक ही इनका लक्ष्य है और एक ही चीज़ को इनको पाना है। जैसे कि मूलाधार चक्र पर गणेश तत्व है, गणेश जी का तत्व है। गणेश जी के तत्व के कारण हम आप पृथ्वी पर बैठे हुए हैं, ऐसे फँके नहीं जा रहे। अगर हमारे अन्दर गणेश जी का तत्व नहीं होता तो इस पृथ्वी पर टिक नहीं सकते थे। इतने जोर से यह पृथ्वी घूम रही है, इस पर हम चिपके नहीं रहते। कोई कहेगा कि 'पृथ्वी के अन्दर ही यह गणेश तत्व है माँ' यह बात भी सही है। पृथ्वी के गणेश तत्व की वजह से ही हम पृथ्वी पर जमे हुए हैं। लेकिन जो पृथ्वी के अन्दर है उसको उसका axis कहते हैं, याने इस लाइन में वो तत्व बसा हुआ है उसको कहते हैं। हालांकि axis कोई है नहीं, कोई ऐसी सलाख axis नहीं है पर मानते हैं कि जो शक्ति है इसके तत्व की वो इस लाइन पर चलती है, उसी के ऊपर होती है उसके बीचोंबीच, सो वो तत्व हमारे अन्दर क्या बनकर रहता है इससे हमें दिशा का भान हो जाता है।

जानवरों में यह तत्व ज्यादा होता है पक्षियों में यह ज्यादा होता है क्योंकि भोले भाले जीव हैं। उनमें छल, कपट, वैराग्य कुछ नहीं, वह विचार नहीं कर सकते। उनमें विचार करने की शक्ति नहीं है और न ही वो आगे का सोच सकते हैं ना ही वो

पीछे का सोचते हैं। जो चीज सामने आती है उसी से वो काम लेते हैं। पीछे का बिल्कुल नहीं सोचते। आपको आश्चर्य होगा जब कोई बन्दर, आप देखिये, मर जाये; जब तक वो मरता नहीं तब तक वो हाय तोबा मचायेंगे, जैसे ही वो मर जायेगा वो उसको छोड़ देंगे, भाग जायेंगे, मतलब यही खत्म। अब इससे मर गया न, यह तो ऐसा हो गया जैसे, कोई दूसरे पत्थर, अब इससे कोई मतलब नहीं, बिल्कुल बेकार चीज है। लेकिन धीरे धीरे उसके अन्दर यह जरूर है कि अनुभव; जैसे आपने शेर को पकड़ने की कोशिश की, दो तीन बार उसको जाल में फंसा लिया, तो फिर वो ताड़ जाता है कि इसमें कोई गड़बड़ है। बहुत कुछ तो भगवान की दी हुई चीज है लेकिन कुछ कुछ फिर वो सीख जाता है। आदमियों से भी तो बहुत कुछ सीख लेता है लेकिन उसमें परमात्मा की दी हुई चीज बहुत ज्यादा है। जिससे उसमें स्फूर्ति आती है। जैसे जापान में ऐसे पक्षी हैं, जब वो उड़ने लगते हैं ज्यादा और भागने लग जाते हैं, तब लोग समझ जाते हैं कि अब जलजला आने वाला है, भूकम्प आने वाला है। क्योंकि इन पक्षियों को गड़गड़ाहट बहुत पहले सुनाई दे जाने लगती है। जानवरों को भी आवाज मनुष्य से बहुत ज्यादा पहले सुनाई दे जाती है। बहुत सुनने की शक्ति, देखने की शक्ति। अगर कोई चील ऊँचाई से देखे तो वो समझ जाती है कि यह आदमी मरा है या जिन्दा। यह सारी जो आठ इन्द्रियों की शक्तियाँ हैं ये जानवरों में इन्सान से ज्यादा हैं और उसमें से सबसे बड़ी शक्ति जो उसके पास होती है, जो गणेश तत्व से पाई जाती है वो है दिशा का अनुभव, कौन सी दिशा में जाना चाहिए। मैंने कल आपसे बताया था कि जब पक्षी साईबेरिया से आते हैं तो वो उसी वजह से जानते हैं कि वो उत्तर जा रहे हैं या दक्षिण जा रहे हैं,

या पूरब जा रहे हैं या पश्चिम में जा रहे हैं। पर जैसे-2 गणेश तत्व कम होता जाता है वैसे-2 दिशा का ज्ञान समाप्त होता जाता है। दूसरी तरफ मनुष्य प्राणी में जो आदमी बहुत ज्यादा सोच-विचार के चलता है, कि मैं ये करूँ या न करूँ, इसमें कितना लाभ होगा, इसमें कितना नुकसान होगा, इसमें रुपया लगाऊँ कि इसमें रुपया लगाऊँ, इस तरह की फालतू बातों में जब अपना चित्त बरबाद कर देता है, उसको दिशा का भान कम हो जाता है। उसको आप एक दिशा में खड़ा कर दीजिए कि आपको उत्तर में जाना है। थोड़ी देर में देखियेगा, वो दक्षिण की ओर चले जा रहे हैं। रास्ते का उसको ज्ञान नहीं रहता। अगर आप उसको कहीं खड़ा कर दीजिये आप उससे पूछिये रात में पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण कैसे पता लगायें, सूरज तो है नहीं। जब आप का चित्त इसी तरह बाहर की ओर ज्यादा हो जाता है, और या तो आप किसी की चालाकी से परस्त होते हैं या आप किसी की चालाकी से डुबाना चाहते हैं, दोनों ही चीज हो सकती हैं। आप या तो भयग्रस्त हैं कि दूसरा आपको चालाकी से खा न डाले और या तो आप किसी के पीछे लगे हैं कि उसे चालाकी से कैसे डुबाया जाए— दोनों हालात में आपकी जो अबोधिता है आपकी जो innocence है वो घटती जाती है। और जब ऐसी गति आ जाती है तो आपको दिशा का आभास नहीं रहता। एक छोटी सी बात बताएं, आप बुरा मत मानिये। मैं आजकल देखती हूँ पहले लड़कियों में ये बात थी लेकिन उनमें भी यह बात नहीं। दिल्ली शहर में ज्यादा है, कि हर आदमी की ओर नज़र उठाकर देखने लगी हैं। पहले तो मर्द ही देखते थे, अब औरतों ने भी शुरू कर दिया है। अब इसको आप सोचते हैं ये बहुत ही सीधी बात है, इसमें कौन सी ऐसी बात है।



हर आदमी को और जरूरी है ऐसे देखना। लोग कहेंगे इसमें शिष्टाचार की बात माँ कह रही है। ये बहुत गहरी बात है। जितना आप देखते हैं, उतना ही चित्त आपका बाहर की ओर जाता है, जितनी आपकी दृष्टि बाहर की ओर जाएगी उतना आपका मूलाधार चक्र खराब होगा। विशेष करके इस तरह की चीजों की ओर या बहुत से लोगों की ये आदत होती है कि हर रास्ते में जो चीज़ पड़ती है, हर advertisement पढ़ना चाहिए अगर एक दो चीज़ छूट गई तो पीछे मुड़कर देखेंगे, वो पढ़ना है। या हर चीज़ बाजार में दिख रही है, हर चीज़ उनको देखना ही है। ये कौन सी चीज़ है, कौन सी चीज़ है, कौन सी चीज़ है। आँख का सम्बन्ध हमारे मूलाधार चक्र से बहुत नजदीक का है। पीछे की तरफ में यहाँ पर भी हमारा मूलाधार चक्र है। इसका सम्बन्ध हमारी आँख से बहुत जबरदस्त होता है। इसलिए जो लोग अपनी आँखें बहुत इधर-उधर चलाते हैं उन को मैं आगाह कर देना चाहती हूँ कि उनका मूलाधार चक्र बहुत खराब हो जाता है और अजीब-2 तरह की परेशानियाँ उनको उठानी पड़ती हैं। सब से पहले तो बात यह हो जाती है कि ऐसे आदमी का चित्त स्थिर नहीं रह पाता। क्योंकि वो अपनी दिशा भूल गया। इधर-उधर धीरे-धीरे देखना भी दिशा भूल का एक नमूना है। जिस आदमी को अपनी दिशा मालूम है, वो सीधे चला जाता है। दिशा का भूल जाना मनुष्य ही कर सकता है, जानवर नहीं कर सकता। क्योंकि उसको कोई वजह ही नहीं, वो दिशा क्यों भूले ! समझ लीजिये किसी एक जानवर ने किसी दूसरे जानवर को मार कर कहीं डाल दिया, उसे मालूम है उसने उसे कहीं डाला है, उसको उसकी सूँघ आएगी, उस की समझ में आएगा, वो बराबर अपने मौके पर पहुँच जाएगा।

भटक नहीं सकते। अगर आप किसी बिल्ली को घर से निकालना चाहें तो सात मील की दूरी पर उसको ले जाकर छोड़ दें, तो भी शायद वापस चली आएगी। कुत्ते के तो क्या कहने, कुत्ता तो ऐसे सूँघ कर घूमता है कि उसे फौरन पता चल जाता है कि चोर कहाँ गया और कहाँ की चीज़ कहाँ गई। लेकिन मनुष्य के अन्दर तो सूँघने की शक्ति भी बड़ी नष्ट हो जाती है। उसे गंदगी की तो बदबू आने लगती है लेकिन पाप की गंदगी की नहीं आएगी। वो उसे नहीं सूँघ पाता है जो हमारे अन्दर पाप बन कर जी रहा है और जो आदमी है महापापी। उसके साथ हम खड़े हैं। उसको उस की बदबू जरूर आ जाएगी कि यहाँ गन्दा पड़ा है, यहाँ सफाई नहीं है, यह नहीं है, वो नहीं है, महापापी जो उसके पास खड़ा है उसकी बदबू उसको नहीं आयेगी। और वो महापापी कोई हो, मिनिस्टर हो कोई हो तो उसके तलुए चाटने में इनको फरक नहीं पड़ेगा।

गणेश तत्व के खराब हो जाने से मनुष्य का सारा, यों कहना चाहिए कि, अस्तित्व खराब हो जाता है और गणेश तत्व जो है उस पर चन्द्रमा का वर्षाव है। चन्द्रमा जब बिगड़ जाते हैं तो आदमी को Lunacy की बीमारी हो जाती है, आदमी पागल हो जाता है। और पागल तो क्या हो जाता है असल में बात यह होती है कि जब आदमी इधर उधर अपनी आँखें घुमाने लग जाता है, तो उस का चित्त अपने आप अपने काबू में नहीं रहता और कोई सी भी दुष्ट आत्मा उस पर आघात कर सकती है। जब विदेश के लोगों को मैंने बताया कि तुम लोग क्या कर रहे हो अपनी आँख के साथ। ईसा मसीह ने साफ शब्दों में कहा यह लिखा गया है कि 'Thou shall not commit adultery' लेकिन I would say unto 'Thou shall not have adultrous eyes.'

हम इस तरह से अपना गणेश तत्व खराब करते रहते हैं। और जिसका गणेश तत्व खराब हुआ, उसकी कुण्डलिनी टिक नहीं सकती, फिर खिंचकर वापस चली आती है। कितनी भी मुश्किल से ऊपर उठ कर कुण्डलिनी जैसे कि कोई चरखी हो इस तरह से गणेश जी उसे खींच लेते हैं।

कुण्डलिनी उठती नहीं और उठती भी है तो फिर जाकर दब जाती है। इसमें, अगर समझ लीजिये कोई आदमी चोर हो, चकार हो, चोरी करता हो तो परमात्मा की नज़र में इतना बड़ा गुनाह नहीं है। Govt. से चोरी करता है तो समझ लो कि Income है अपना ही Income है उसमें पता नहीं कौन चोर है। Govt. चोर है या जिसका Income tax खाया जा रहा है वो चोर है। उसका मतलब यह नहीं कि आप Income tax न दें लेकिन परमात्मा की नज़र में वो आदमी बहुत दूषित है जिसकी नज़र स्त्री के ऊपर शुद्ध नहीं है। सिवाय अपनी पत्नी को छोड़कर बाकी सब औरतें शुद्ध स्वरूप में देखनी चाहिए। लेकिन आज के लोग ऐसा मानते नहीं कि ऐसा होता था। जैसे हमारी उम्र में हम तो अधिकतर लोगों को ऐसा ही देखते थे। अब इस उम्र में देखते हैं तो हमारी उम्र की औरतें, जो लोग बुढ़े लोग हैं वो भी सत्यानाश हो गए। अपनी उम्र में उन्होंने अपने जवानों से ये बातें सीखी हैं और बुढ़े ज्यादा ही बरबाद हो गए जवानों से। कुछ समझ में नहीं आता कि इन लोगों को अकल कब आयेगी। जब जवान थे, कोई मजाल नहीं जब हम लोग छोटे थे तो कभी भी ऐसा सवाल नहीं उठता था। हम तो अकेले चले जाते थे कहीं भी। पंजाब में भी हम पढ़े हुए हैं। पंजाब में मजाल नहीं कोई बदतमीजी कर ले सब लोग फाड़ खायेंगे। और अब वहीं के ये

लोग पंजाबी आये हैं। मजाल नहीं सरदार जी लोग किसी औरत को कभी बुरी निगाह से किसी ने देख लिया तो खून-खराबी हो जाती थी। और आज यह अपनी हालत हो गई है कि किसी को किसी का पता नहीं। और अगर आप कहें कि यह कैसे हो सकता है हमारा तो चित्त ही नहीं बच सकता। अरे भई, पचास साल पहले यह नहीं था, चालीस साल पहले भी नहीं था तो आज क्या हो गया है कि हम लोगों की सभी आँखों की शर्म और हया कहीं चली गई ? अरे कोई बताता थोड़ी था कि शर्म, हया करो, वह तो सब अन्दाज हो ही जाता था। इन्सान को पता रहता ही था। इसी तरह से पहले लोग रहते थे। आजकल बहुत लायक हो गए ना ? तो जैसे-2 चलते हैं अगर हमने इसमें अपना गणेश तत्व खो दिया, बहुत कुछ खो दिया। कल आपने पूछा तो मैं बता रही हूँ वरना मैं कहती नहीं कि लोग बुरा मान जायेंगे। लेकिन आजकल जो हवा है वो बहुत खराब है, बहुत नुकसानदेय है। इसी से हमारे यहाँ सब तरह के indiscipline (अनुशासन हीनता), खराबी और बदतमीजियों और दुष्टता आ रही है। जब आप इस तरह के काम शुरू कर देते हैं। अब तो जब औरतें भी इस ढंग की हो गई, तो आदमियों का क्या हाल होगा ? इस तरह आजकल औरतों का हाल है आदमी तो आदमी औरतें भी इस तरह की होने लग गई इस संसार में। परमात्मा का राज्य आना मुश्किल है। आजकल इस तरह के गुरु भी हो गए हैं जो सिखाते हैं कि ऐसे धन्य करो तो भगवान मिल जायेगा। तो और भी अच्छे ऐसे गुरुओं के इलाकों में लोग आ गए ऐसे गुरुओं के हाथ पड़ते हैं। यहाँ अब इतने बैठे हैं, ऐसे गुरुओं के पास दस गुने बैठ जायेंगे। ये बातें किसी को अच्छी थोड़ी लगती हैं। अरे भाई आराम से जैसा करना है करो



अपने गणेश तत्व को कुचल मारो, गणेश जी को सुला दो।

कुण्डलिनी तत्व जो है। ये कोई साइन्स-वाइन्स (विज्ञान) की बात नहीं है ये तो पवित्रता की बात है। पवित्र आदमी की—Holiness, लोग मुझे Her Holiness तो कहते हैं पर Holiness (पवित्रता) की जब बात करती हूँ तो उनको समझ में नहीं आता कि आजकल तो कोई गुरु ऐसा नहीं करता कि आपको पवित्र होना चाहिए। माताजी तो एक अजीब गुरु हैं जो पहले ही शुरू कर देती हैं कि आपको पवित्रता रखनी चाहिए। वाह, अधिकतर तो गुरु यही कहते हैं कि भाई जो करना है वो करो पर पैसा जमा कर दो, बस काम खतम। पैसा तुमने जमा किया कि नहीं ?

कुण्डलिनी-जागरण जो है, यह असलियत है, reality है, actualisation है। इसके लिए मनुष्य का पवित्र होना जरूरी है। अगर आप पवित्र नहीं हैं तो आपको कुण्डलिनी जागरण का अधिकार मिलना नहीं चाहिए। फिर भी माँ का रिश्ता है, माँ मानने को तैयार कभी नहीं होती कि मेरा बेटा जो है वो गिर गया है। उसके लिए बड़ा मुश्किल हो जाता है क्योंकि उसको ही लांछन लगता है। इसी से तो सारी अपनी पुन्याई लगा के कहती हूँ कि पूजा-पाठ तो करा दो। पहले यह बात जानना चाहिए कि चाहे आप बुरा मानें या भला अपने जीवन में पार होने के बाद आपको जरूर पवित्र बनाना होगा। पवित्रता आप में बहुत जरूरी आनी चाहिए। इसका यह मतलब नहीं कि आप सन्यासी बनकर घूमें, सन्यासियों को भी सहज-योग नहीं मिल सकता। यह मतलब मेरा बिल्कुल नहीं कि आप किसी unnatural (अप्राकृतिक) तरीके से रहिये, बिल्कुल नहीं। इससे आदमी बड़ा ही शुष्क हो जाता है, सूखा इन्सान हो

जाता है। वो भी मना है। देखिये, मंगलमय वैवाहिक जीवन सहज-योग में आशीर्वादित होता है। यहाँ तक कि सहज-योग के विवाह भी होते हैं जो बहुत ज्यादा हमने देखे हैं, लाभदायक होते हैं। सहज-योग की तरफ से हम लोग विवाह करते हैं, उससे बहुत लाभ होता है।

विवाह एक मंगलमय कार्य है और उसमें आप जानते हैं हम हमेशा गणेश की स्तुति करते हैं। अगर आपमें पवित्रता नहीं है तो आप परमात्मा की बात नहीं कर सकते, सच बात मैं आप से कहूँ। इसलिए बहुत लोग कहते हैं, कि माँ हमारे कर्मों के फलों का क्या होगा ? और हमारे कर्म अच्छे हैं नहीं। बहरहाल मेरे सामने यह बातें नहीं करने की क्योंकि माँ के लिये ये सब कुछ मुश्किल काम नहीं। उनका नाम ही बनाया है पाप-नाशिनी वगैरह, तो क्या है ? लेकिन पार होने के बाद याद रखना कि आप पार नहीं थे अन्धेरे में थे। चलो जैसे भी हो लेकिन उसके बाद यह बात जाननी चाहिये कि अपने गणेश तत्व को आप बहुत आसानी से जगा सकते हैं। जब यह परदेसियों में जम गया तो फिर आप लोगों में क्यों न जमे ? जब इन लोगों ने सीख लिया है कि पवित्रता क्या है तो क्या आप लोग नहीं जमा सकते ? कम से कम ऐसा हिन्दुस्तानी अभी तक मुझे नहीं मिला जो अपवित्रता को अच्छी समझता हो। करता है, पर जानता है कि गुनाह है, गलती है, यह समझता है। कोई हिन्दुस्तानी चाहे विदेश में रहा हो, करता है पर जानता है गलत काम हैं। लेकिन यह तो बेचारे यह भी नहीं जानते कि यह गलत काम है। यह तो सोचते हैं अच्छा काम है। वो तो कहते हैं कि करना ही चाहिए ऐसा। इसके बिना आपका कल्याण नहीं, ऐसा भी ये लोग सोचते हैं। इतने बेवकूफ हैं इस मामले में, यानि सरल हैं बेचारे। तब

भी वो बच गए, आप भी बच सकते हैं। लेकिन जिम्मेदारी आप पर है। इस गणेश तत्व को बनाये रखें जैसे गणेश हैं। देखिये मूलाधार चक्र जो है वो कहाँ पर है ? जो कुछ भी विसर्जित किया है उसको कहना चाहिए कि excretion जितना होता है उस पर श्री गणेश बैठा दिये गए हैं। वो सारा कार्य श्री गणेश करते हैं। क्योंकि श्री गणेश जैसे कीचड़ में कमल होता है उस प्रकार हैं। अपनी सुगन्ध से सारा सौरभ इतना लुटाते हैं कि वो कीचड़ भी सुगन्धमय हो जाता है। आपको आश्चर्य होगा कि जैसे ही आपका गणेश तत्व जमना शुरू हो जायेगा आपने सोचा भी नहीं होगा, आप जानते भी नहीं होंगे कि कितना आनन्द अन्दर से आने लगता है क्योंकि तत्व निर्मल है इसका। तत्व का मतलब ही निर्मलता है। जो चीज़ निर्मल है, माने तत्व पर आ गई उसका मल ही सारा हट गया और वो ही निर्मल होता है जो किसी मल को अपने अन्दर जमने न दे। कोई भी चीज़ जो निर्मल करती है वो तत्व ही हो सकती है। क्योंकि तत्व से कोई चीज़ लिपट नहीं सकती। हमेशा तत्व बनी रहता है। इसलिए सबसे पहले हम लोग गणेश का आह्वान करते हैं और उनकी आराधना करते हैं और उनको हम मानते हैं। लेकिन आजकल लोग कुछ ऐसे निकल गए हैं कि कुण्डलिनी के नाम पर गणेश जी का अपमान कर रहे हैं सुबह से शाम तक। इतना अपमान कर रहे हैं कि मैं आपसे बता नहीं सकती।

कुण्डलिनी उनकी माँ है और वो भी कन्या। कन्या स्थिति में वो भी जब पति के विवाह से पहले उनका स्वागत करने से पहले जब नहाने गई, विवाह उनका हो चुका था, लेकिन अभी पति से मुलाकात नहीं हुई थी। तो जब नहाने गई थी तब उन्होंने श्री गणेश जी को बनाकर

bathroom के पास रख दिया था। यह बात सही है, एक दूसरे माने में या एक दूसरे आयाम (dimension) में। यह बात है कि वो अपनी माँ की रक्षा करें, कि उन की प्रतिष्ठा की रक्षा करें, उनके protocol की, उनकी पवित्रता की रक्षा करें क्योंकि वो virgin (कुमारी) हैं, वो कन्या हैं, इसी प्रकार हमारे अन्दर जो कुण्डलिनी है गौरी स्वरूपा है, अभी है, उनका उनके पति से मेल नहीं हुआ। पति उनके आत्मा-स्वरूप शिवजी हैं और गणेश वहाँ बैठे हुए हैं और उस दरवाजे पर श्री गणेश बैठे हुए हैं और उस दरवाजे से शिवजी भी नहीं जा सकते। इतना पवित्र वो दरवाजा है और यह दुष्ट लोग, इनको तो तान्त्रिक कहना चाहिए, उस तरह से कोशिश करते हैं कुण्डलिनी माँ की ओर जाने की और इसी वजह से उनको हर तरह की तकलीफ हो जाती है। जिस आदमी में पवित्रता नहीं है उसको कोई अधिकार नहीं है कि वो कुण्डलिनी जागृत करे। अगर ऐसा आदमी कोशिश करेगा तो जरूरी है कि श्री गणेश उस पर नाराज हो जायेंगे और फलस्वरूप उसके अन्दर अनेक तरह की विकृतियाँ आ जायेंगी। कई लोग तो, मैंने सुना है, नाचने लग जाते हैं, कई लोग हैं चिल्लाने लग जाते हैं, कई लोग भ्रमित हो जाते हैं, और कई जानवर जैसी बोलियाँ निकालने लगते हैं। किसी किसी लोगों को मैंने देखा है कि उनके अन्दर blisters (फफोड़े) आ जाते हैं क्योंकि ऐसे लोगों के पास वो जाते हैं जो अपवित्र हैं, जिनको कुण्डलिनी के लिए कोई मालूमात नहीं और जब वो कुण्डलिनी की ओर अग्रसर होते हैं, गलत रास्तों से और गलत तरीकों से तब उन पर स्वयं साक्षात् गणेश गरजते हैं। साधक के श्री गणेश, और साधक को बहुत तकलीफ उठानी पड़ती है। सारा तान्त्रिक शास्त्र गणेश जी को नाराज करके पाया जाता



हैं। जिनको लोग तान्त्रिक कहते हैं वो असल में तान्त्रिक नहीं हैं। जो वास्तविक निर्मल तन्त्र है वो यह है, जो सहज-योग है। क्योंकि तन्त्र माने कुण्डलिनी है, यन्त्र माने कुण्डलिनी है तो यह शास्त्र केवल सहज-योग में ही जाना जा सकता है। और बाकी जो तान्त्रिक हैं ये परमात्मा के विरोध में हैं, ये दुष्ट लोग हैं, ये देवी जी को नाराज करके, ये गणेश जी को नाराज करके उनके सामने व्यभिचार करके ऐसी सृष्टि तैयार करते हैं जहाँ वो दुष्ट कारनाम कर सकते हैं, जहाँ वो भूत विद्या, मशान विद्या आदि करके लोगों को भ्रमा सकते हैं। यह बहुत समझने की बात है, कि जिसका गणेश तत्व ठीक होगा उस पर कभी तान्त्रिक हाथ नहीं मार सकते, कभी नहीं, चाहे कितनी भी कोशिश कर लें। जिस आदमी का गणेश तत्व ठीक है, उस आदमी का कोई बाल बौका नहीं कर सकता। इसलिये गणेश तत्व जो कुछ है वो सुरक्षा का तत्व है।

सबसे बड़ी सुरक्षा गणेश तत्व से होती है। इसलिये अपने गणेश तत्व को आपको बहुत ही ज्यादा सुचारु रूप से संवारना चाहिये। सबसे पहले तो अपनी नजर नीचे रखिये। लक्ष्मण जैसे आप बनें, और अपनी आँख सीताजी के चरणों में ही रखिये। क्या उनके अन्दर कोई पाप नहीं था लेकिन सीताजी के ही क्या, इसका मतलब यह है कि उन्होंने चरण को ही देखा क्योंकि उन्हें ज्ञात था कि ऊपर देखना, किसी की ओर दौड़ना अपना चित्त ही बिगाड़ना है। गणेश तत्व हमें पृथ्वी माँ से मिला मिला है, धरती माँ ने हमें गणेश तत्व दिया है। अब हम इसलिये पृथ्वी माँ का अनेक बार धन्यवाद मानते हैं कि आपने हमें यह तत्व देकर के दिशा का ज्ञान दिया। जब मनुष्य के अन्दर गणेश तत्व जागृत हो जाता है, उसके अन्दर विवेक-बुद्धि

आ जाती है। इसलिये गणेशजी से हम कहते हैं कि हमारे अन्दर विवेक, सुबुद्धि हमारे अन्दर Wisdom दीजिये। मनुष्य के अन्दर यदि दिशा का ज्ञान नहीं भी हो तो कुछ फरक नहीं पड़ता लेकिन अच्छे बुरे का उसको ज्ञान होना जरूरी है। इसीलिये हम उनसे माँगते हैं कि हमें आप विवेक दीजिये। इसीलिये वो विवेक देने वाले माने जाते हैं। यह गणेश तत्व है।

अब हमारे अन्दर जो दूसरा बहुत महत्वपूर्ण तत्व है वो है विष्णु तत्व। विष्णु तत्व से हमारा धर्म धारण होता है अन्दर, जो कि हमारे नाभि चक्र से प्रवाहित होता है, जो हमारे नाभि में है। नाभि में हमारे अन्दर धर्मधारण है। जैसे कि आप amoeba में थे तो आप अपना खाना पीना खोजते थे। जब आप amoeba से और ऊँचे हो गए, इंसान की दशा में आ गए तब आप अपनी सत्ता खोजते हैं और उससे आगे जब आप जाते हैं तो आप 'परमात्मा' को खोजते हैं। आप के अन्दर यह धर्म है कि आप परमात्मा को खोजें, यह मनुष्य का धर्म है। जानवर नहीं खोज सकते। कोई भी प्राणी परमात्मा को नहीं खोज सकता, केवल मनुष्य ही परमात्मा को खोज सकता है। ये मनुष्य का धर्म है। और इसके दस धर्म हैं और ये धर्म का तत्व विष्णु जी से हमें मिलता है। अब बहुत से लोग सोचते हैं कि विष्णु जी से हमें पैसा मिलता है, और विष्णु जी से हमें और लाभ होते हैं लेकिन ये बात नहीं है कि सिर्फ उनसे हमें पैसा ही मिलता है। ऐसी ऐसी गलत भावनाएं हमारे मन में बसी हुई हैं कि विष्णु जी से सारा क्षेम जो है हमें मिलता है और बाकी कोई मतलब नहीं। सारे क्षेम से क्या लाभ होता है, आप सोचिये ? जब मनुष्य क्षेम को पाता है, समझ लीजिए, आप एक दशा लीजिए। एक मछली है उसने यह जान लिया कि अब हम इस समुद्र से पूरी तरह से संतुष्ट हैं,



तो संतोष को पा लेती है तब उसे विचार आते हैं कि समुद्र को तो सब देख लिया, उसका तो धर्म हमने जान लिया समुद्र का, अब हमें जानना है कि जमीन का धर्म क्या है। तो वो अग्रसर होती है। मछली का अवतरण जो हुआ है तो सिर्फ इसलिए हुआ है, कि एक मछली उसमें से बाहर आ गई। अब जब वो मछली बाहर आ गई—एक ही मछली—वही अवतार हम मानते हैं जो पहले बाहर आई और उसने बहुत सारी मछलियों को अपने साथ खींच लिया। क्या सीखने के लिये? कि धर्म क्या है। कौन सा धर्म? जमीन का धर्म क्या है? इसलिये नहीं कि वो मछलियाँ बाहर आ गई। अब उनमें दूसरा धर्म सीखने की बात आ गई। पहले पानी का धर्म सीखा फिर अब जमीन का धर्म सीखने लगे। जब जमीन का धर्म सीखने लगे तो रेंगते रेंगते उन्होंने देखा कि पैड़ भी है। पैड़ के भी आप पत्ते खा सकते हैं। क्षुधा पहली चीज़ होती है जिससे कि आदमी खोजता है। खोजने की शक्ति नाभि में ही पहले इसलिए होती है कि उसमें क्षुधा होती है। आपको इच्छा होती है कि किसी तरह से अपने.....और जानवर हो जाने के बाद उसने सोचा कि अब गर्दन उठाकर रहें। बहुत झुक-झुक कर रहे अब गर्दन उठाकर रहें। जब उसने गर्दन उठाई तब वो मनुष्य बना। धीरे-धीरे फिर वो मनुष्य बना। गर हमारे अन्दर ये जो धर्म है कि हम धर्म को धारण करते हैं, जैसे कि पहले मछली का धर्म था कि वो पानी में तैरती थी, उसके बाद कछुए का धर्म था कि वो रेंगता था जमीन पर, उसके बाद जो जानवर थे उनका ये धर्म था कि वो चार पैर से चलते थे लेकिन उनकी गर्दन नीचे थी। फिर घोड़े जैसे उन्होंने अपनी गर्दन ऊँची की थी। उसके बाद उन्होंने सारा शरीर ही खड़ा कर दिया और दो पैर पर खड़े हो गए। ये मनुष्य का धर्म है कि दो पैर

पर खड़ा है और उसकी गर्दन सीधी है—ये तो बाह्य में हुआ—बहुत ही ज्यादा जड़ तरीके से, आप समझे? लेकिन तत्व में क्या मनुष्य के पास जो कि हर बार जब भी आप कोई—सा भी काम करते हैं तो तत्व अपने कार्य में भी उसी तरह से प्रभावित होना चाहिए। समझ लीजिए आज हम इसमें से बातचीत कर रहे हैं और हम समझ रहे हैं। लेकिन इससे भी बढ़िया कोई चीज़ आ जाए तो ये मशीनरी जो काम करेगी वो भी नई होगी या नहीं। इसी प्रकार मनुष्य के अंदर का भी जो तत्व है, वो एक नया विकसित तत्व है, और वो तत्व जो कि परमात्मा को खोजे, उसका जो तत्व है तो परमात्मा को खोजता है। इसलिए मनुष्य का प्रथम तत्व है परमात्मा को खोजना। जो मनुष्य परमात्मा को खोजता नहीं वो पशु से भी बदतर है। अब जब वो परमात्मा को खोजने निकला तब उसका तत्व जो है, नाभि चक्र का पूर्ण हुआ। अब वो अगले तत्व पर आया। कि जब परमात्मा को खोजने लगा तो उसने देखा कि संसार की सारी सृष्टि बनी हुई है। हो सकता है इन तारों में, ग्रहों में और इन सब में ही परमात्मा हो। उसके तरफ उसकी दृष्टि गई। तब उसे हिरण्यगर्भ याद आए। उन्होंने वेद लिखे। उनका अग्नि आदि जो पाँच तत्व की ओर चित्त गया। उसको जानने की उन्होंने कोशिश करी। उनको जानते हुए उनको जो हवन वगैरा करते थे, वो किये और ब्रह्मदेव और सरस्वती की अर्चना की और सब कुछ करने के बाद भी उन्होंने देखा कि इस सबको तो हम जान गए, बहुत कुछ जान गए। जैसे कि Science में लोग सब कुछ जान गए, बहुत कुछ जान गए। लेकिन जब Science का नतीजा निकला तो उन्होंने कहा कि ये क्या, हमने तो atom bomb बना दिया। अब उस कगार पर आकर खड़े हो गए Science वाले भी कि हम आगे

कहाँ जा रहे हैं, अब तो गड़ढ़ा ही सामने है। इससे एक कदम आगे गए तो सारा संसार एक क्षण में खत्म हो जाएगा। अब उन्होंने किताबें लिखी हैं कि आप अगर पढ़ें तो एक है कि shock पर, मतलब ये कि कितना बड़ा shock है, और संसार में लोग अज्ञान में बैठे हैं, इसलिए दुखी हैं। जैसे France के लोग हैं तो हमेशा मुँह लटकाए रहते हैं। तो मैंने कहा कि ये क्यों ? तो कहने लगे, माँ इन लोगों को अगर कहिये कि आप सुखी हैं और आनन्द में तो कहेंगे आप से बढ़कर बुद्धू कोई नहीं। और आप बिल्कुल ही इस दुनिया की बात नहीं जानते तो मैंने कहा—अच्छा। क्योंकि ये कहते हैं कि हम तो पढ़ते लिखते रहते हैं और हमने ऐसी ऐसी किताबें पढ़ी हैं जिनसे से ज्ञात होता है कि दुनिया पर बड़ी भारी आफत आने वाली है और सारा संसार खत्म हो जाने वाला है। मनुष्य ने पूरी तैयारी कर ली है कि अपने को एक मिनट में खत्म कर ले। और ये बड़ी भारी आफत की चीज़ है और आप सुख में बैठी हैं, आनन्द में बैठी हैं। तो इन पर विश्वास नहीं होगा। तो मैंने कहा कि क्या इसीलिए लोग शराब पीते हैं ? क्योंकि बड़े दुखी जीव हैं, बड़े दुखी हैं न। मुँह लटकाने के वक्त तो दुखी हैं, फिर शराब क्यों पीते हैं। अच्छा, ये भी कहिये कि अपने गम गलत कर रहे हैं। हाँ ये भी एक बात समझ लें, माँ, कि गम गलत कर रहे हैं। लेकिन हर मोड़ पर एक गन्दी औरत रास्ते में Paris में आपको खड़ी मिलेगी। ये किस सिलसिले में ? ये मैंने कहा कि आदमी ने अपने लिए एक नाटक बना कर रखा है कि भई मैं बड़ा दुखी हूँ, इसलिये मुझे शराब भी चाहिये और पाप भी करना चाहिए। अगर मैं पाप नहीं करूँगा तो मेरा दुख कैसे मिटेगा ? इस तरह की बेवकूफी की बातें करते हैं। अब कहने का मतलब ये है, कि गर तत्व में

परमात्मा को खोजना ही सब बात है तो आप समझ सकते हैं कि Science के रास्ते से आपको परमात्मा नहीं मिल सकते। Science के रास्ते से आपने जो कुछ पाया है, जो कुछ आपने बड़ा भारी 'ज्ञान' पाया है, उससे किसी ने भी आनन्द को नहीं पाया है। हाँ, ये जरूर है कि आप आलसी हो गए पहले से ज्यादा। अब आप चल नहीं सकते। England में आप किसी दुकान में चले जाइए, अगर किसी को 2,4,6 का गुणन करके बताइए तो कर नहीं सकते। तो उनको तो चाहिए—Computer, उसके बगैर उनका काम नहीं चलता है, वो अगर खो गया, तो उनकी खोपड़ी गायब है। पहले तो अति सोचने से उनके हाथ बेकार हो गए। कोई भी कशीदाकारी का काम, खाना बनाने का काम, कोई भी काम वो नहीं कर सकते। अब, जब उनकी खोपड़ी ज्यादा चलने लग गई, उसके बाद मशीन बन गई और उन्होंने अपनी खोपड़ी को मशीन में डाल दिया। अब जब मशीन आ गई तो खोपड़ी भी बेकार। अब सब कुछ उनके लिए मशीन हो गई उसके बगैर वो चल नहीं सकते। अगर वहाँ पर बिजली बंद हो जाए, तो लोग आत्महत्या कर लें। तो अपने यहाँ, भगवान की कृपा से अच्छा है। अभी भी लोगों को आदत है, कि बिजली चली जाती है। और वहाँ लोग परेशान रहते हैं, कि गर वहाँ एक बार बिजली चली—गई अमेरिका में बिजली गई तो न जाने कितने accident हो गए, कितनी आफतें आ गई, कितनी परेशानियाँ आ गई, कि तूफान हो गया, कि कभी जलजला आया हो तो इतनी आफत नहीं थी जितना कि बिजली का। उसका तो बड़ा नाटक हो गया। इस कदर उन्होंने अपनी गुलामी कर ली और अब इनको पता हो रहा है, कि plastic के इन्होंने इतने बड़े बड़े पहाड़ खड़े कर दिये। अब इन plastic का क्या करें ?



इनको नष्ट कैसे करें ? अब इसके पीछे लगे हुए हैं। अब सर पकड़ कर बैठे हुए हैं। एक घर में अगर आप जाइए तो आपको न जाने कितनी तरह की चीजें दिखाई देंगी। हिन्दुस्तानी लोगों का तो दिमाग खराब हो रहा है। जब भी मुझसे कहते हैं कि विलायत से आते हुए nylon की साड़ी लाओ। अरे भई, यहाँ इतनी बढ़िया cotton की साड़ी मिलती है, silk की साड़ी मिलती है। काहे को वो nylon पहनते हैं। पर हम लोगों को तो nylon का शौक हो गया है। हमें plastic का शौक हो गया है। वहाँ किसी को बता दें तो किसी को विश्वास नहीं होता कि हम इतने बेवकूफ हैं। वहाँ पर तो लोग cotton को भगवान समझते हैं क्योंकि उनको मिलता ही नहीं। पहले उन्होंने खूब cotton के कपड़े बनाए। अब समझ लीजिए कि गर उनके यहाँ शराब होती है घर में तो दस तरह के glass होंगे। इसके लिए ये glass, उसके लिए वो glass, उसके लिए वो glass, उसके लिए वो glass। खाना खाने के लिए दूसरा चमचा, तीसरे के लिए तीसरा चमचा। उस के लिए दूसरी प्लेट उसके लिए चौथी प्लेट। अरे भाई, एक थाली लेलो और इस हाथ से खाओ। पच्चीस तरह के glass और पच्चीस तरह के ये और पच्चीस तरह की तश्तरियाँ, भगवान बचाए ! अब ये हालत आ गई कि जितना भी था निकल गया। पृथ्वी माता से सब कुछ तत्व निकाल डाला इन्होंने, खोखले हो गए। अब काहे में खाते हैं। सुबह, शाम हर वक्त कागज में खाते हैं। हमारे एक रिश्तेदार गए थे वहाँ अमेरिका, बेचारे पुराने आदमी हैं। कहने लगे साहब मैं तो तंग आ गया। रोज Picnic करते करते हालत मेरी खराब हो गई। जब देखो तब वो अपनी या तो plastic की प्लेट और या तो कागज की प्लेट। इनके घर में तो ये हालत है।

और हम कहते हैं कि वे affluent हैं, पैसे वाले। अरे इनके पास क्या है ? सिवाय plastic के इनके पास क्या है ? plastic में खाना, plastic में रहना, plastic में मरना और इनके घरों की हालत ये हो गई है कि रहे होटलों में मरे अस्पतालों में। ये तो खानाबदोश हो गए। इनका तो सारा ही कुछ मिट गया। तो इनकी इतनी गलतियाँ हो गई हैं Science वालों की, कि किसी भी बात पर मैं बात करूँगी तो आप हंसते हंसते लोट-पोट हो जाएंगे। Medical Science को देख लीजिए, कोई कहेगा मैडिकल Science में ये हो गया, वो हो गया। क्या हुआ है ? खाक हुआ है। जरा देख लीजिए। अब बता रहे थे अभी अभी कि साहब आप तो मंजन करते हैं यहाँ पर, उसका जो toothpaste होता है तो chloroform उसमें मिला देते हैं उसकी वजह से, तो chloroform मिला देने की वजह से अब कैंसर होने लग गया है, तो कोई लोग कहेंगे कि हिन्दुस्तान से मंगा दीजिए हमको नीम toothpaste उसमें chloroform नहीं होता है। मैंने कहा बहुत अच्छा। क्योंकि chloroform मंहगा है हम कहीं से भेजें। हम तो लगा नहीं सकते chloroform उसमें। यहाँ से चीजें जाना शुरू हो गई, हाथ में जो वो लोग साबुन लगाते हैं उसमें भी chemicals होते हैं असल साबुन नहीं होता है। हिन्दुस्तान का साबुन थोड़े दिन में देख लीजिएगा, सारी दुनिया में चला जाएगा। आप लोग अब शेयर-वेयर मत लीजिए। क्योंकि हिन्दुस्तान का साबुन शुद्ध होता है, वो तत्व पर बना होता है। कोई artificial पर नहीं। हरेक चीज वहाँ की; मैं तो कभी विदेशी चीज इस्तेमाल नहीं करती। इसीलिए—क्योंकि सब चीज इनकी, आप देखिये वो बड़े बड़े scents होते हैं, तंबाकू होता है, क्या क्या होता है उसमें सारा और कुछ नहीं; तंबाकू है। तंबाकू से बना है इसलिए तंबाकू

शब्द। और क्योंकि वो तंबाकू थोड़ी-थोड़ी चढ़ती जाती है, आदमी को नशा आता रहता है वो इस्तेमाल करेगा और वो समझता है कि मैं बड़ा हूँ, मैं तंबाकू इस्तेमाल कर रहा हूँ। तंबाकू है, यानि तंबाकू— का पानी, उससे बनाया हुआ है। और अपने यहाँ के इत्र असल हैं। असल में होते हैं और इनके सारे chemicals होते हैं, इस्तेमाल करने से कोई भी चीज़ इनके यहाँ है ? अब ये कहते हैं कि सर में कई लोग लगाते हैं न — तो अपने यहाँ तो पहले होता ही था तो मेहदी वगैरा लगा लेते थे। और ये लोग जो चीज़ लगाते हैं, करते हैं, उससे कैंसर हो जाता है। वहाँ इतनी artificiality हो गई कि लोगों के भौहें उड़ गए। किसी के बाल उड़ गए, जवानी में ही। किसी के दाढ़ी ही नहीं आती, किसी के कुछ नहीं आती, अजीब बुरा हाल है। पता हुआ कि वो कुछ ऐसी चीज़ इस्तेमाल करते गए कि ये सब चीज़ होना उनका बंद हो गया। वहाँ सरदार जी लोगों को बुरा हाल होगा। और वो लोग ज्यादा शराब पियेंगे तो और भी बुरा हाल होने वाला है।

बहरहाल। कहने की बात ये है artificial चीज़ों में जाने में—क्योंकि हमने अपने तत्व को जाना नहीं। गर इन सब पंचमहाभूतों के तत्व पर उतरने को कहें, तब भी हम जड़ में फंस गए। उसकी जो जड़ता है, तो उसका तत्व नहीं है। सारे पंच महाभूतों का तत्व है ब्रह्मा। और ब्रह्म तत्व क्या उसको पाने के लिए सिर्फ आत्मा को पाने से ही वह हमारे अंदर से बहना शुरू हो जाता है। उस तत्व को तो हमने खोजा नहीं और खोजते गए, खोजते गए। वहाँ पहुँच गए जहाँ वो चीज़ बिल्कुल बाहर आ गई और जड़ हो गई। इसलिए ये हालत है कि उस देश में कोई लोग खुश नहीं है। बड़ा Science मिल गया, बहुत विद्वान हो गए,

पढ़ गए, और अब कगार पर खड़े हुए हैं कि एक कदम आगे गए, और धड़ से सब के सब नीचे। तभी सब लोग shocked हैं बहुत दुखित रूप से। और इस कदर परेशान हैं कि आप को बहुत कम लोग वहाँ इस कदर मिलेंगे जिनकी कोई न कोई चीज़ न फड़क रही हो। आँख फड़क रही है, नाक फड़क रही हो, सिर ऐसे होता है और कई परेशानी। कोई चीज़ वहाँ नहीं मिलेगी जो शांत हो। औरतें आदमी को मारती हैं, आदमी औरतों को मारते हैं, बच्चों को मारते हैं, बच्चे माँ-बाप को मार डालते हैं। कहीं सुना। मार डालते हैं। मतलब वहाँ की statistics है, कम से कम दो तो मरते ही हैं। और तो भी आप सुनिये माँ बाप मारते हैं। तो ये इस तरह की जहाँ संस्कृति बन गई है तो जानना चाहिए कि उन्होंने तत्व को जाना नहीं, अगर जानते होते, तत्व को अगर जानते तो आज ये हालत नहीं होती। "क्योंकि तत्व जो है आनन्द देने वाला है।" तो इन्होंने तत्व को खो डाला। तो ब्रह्म देव का तत्व भी गया। अब अपने देश में है हम लोगों ने कहा कि निराकार ब्रह्म है और उसको पाना चाहिए वेद में, ऐसे लिखा गया है, ये है वो है, ज़िद करके बैठ गए। लेकिन वेद में भी लिखा है — वेद माने विद माने जानना, गर सारा वेद पढ़ करके भी मनुष्य ने अपने को जाना नहीं तो वेद बेकार हुआ कि नहीं हुआ और जब ये बात है तो पहली चीज़ ये है कि वेद का पठन करने से आप को आत्म ज्ञान नहीं हो सकता। उसके पठन से और सब हो सकता है, लेकिन आत्म ज्ञान नहीं हो सकता। गायत्री मंत्र है। गायत्री बोले जा रहे हैं, गायत्री बोले जा रहे हैं। अरे भई ऐसे बकवास से क्या गायत्री देवी जागृत हो सकती हैं ? किसी की हुई, दिखाई दिया आपको ? किसलिए आप गायत्री का मंत्र बोलते हैं, ये भी पता नहीं आपको। गायत्री



को जागृत करने के लिए जरूरी है कि मनुष्य पहले अपनी आत्मा को जाग्रत कर ले, नहीं तो गायत्री जो है—परमात्मा की ही एक शक्ति है—जब तक आपने उस परमात्मा को जान न लिया, तब तक आप गायत्री के सहारे कहाँ चलियेगा? समझ लीजिये कि आपसे Prime Minister नाराज़ हैं, समझ लीजिए, तो आप तो काम से गये। आपने किसी दूसरे को प्रसन्न कर भी लिया तो आप तो काम से गए ही हुए। कोई आप को बचा नहीं सकता। तो जब तक आपने परमात्मा को पाया नहीं तब तक ये सारी शक्तियाँ व्यर्थ हैं, ये ही इसका सारांश है। और “तत्त्व सिर्फ आत्मा ही है।” उसी को पाना है। ये जो शक्तियाँ हैं, इनको पाने से आप परमात्मा नहीं पा सकते पर परमात्मा को पाने से इन शक्तियों के तत्व पर आप उतर सकते हैं। आप जो हैं, जो हमको दूसरी ओर ऐसा चित्त देना चाहिए कि इससे ऊपर जो शक्ति है, जो कि ‘दैवी शक्ति’ मानी जाती है ये आपके हृदय-चक्र में होती है। हृदय चक्र—हृदय से मतलब नहीं है। दूसरा तत्व है जिसे हमें कहना चाहिये, हृदय चक्र का जो तत्व है, वो दैवी तत्व है।

अब दैवी तत्व क्या है हमारे अंदर। जब ये खराब हो जाता है तो क्या उससे नुकसान होते हैं। इसको आप समझ लीजिए। “दैवी तत्व से हमारे अंदर सुरक्षा स्थापित होती है।” इससे हम सुरक्षित होते हैं। जब बच्चा 12 साल का होता है तब तक इस दैवी तत्व के अनुसार, हमारा जो sternum है जो कि सामने की हड्डी है, यहाँ पर, उस हड्डी में सैनिक तैयार होते हैं जिसे अंग्रेजी में antibodies कहते हैं, ये देवी के सैनिक हैं, और ये सारे शरीर में चले जाते हैं और वहाँ जा कर सजे रहते हैं कि आप पर कोई भी तरह का attack आए, उसे रोक दें। जब आपकी सुरक्षा

किसी तरह से खराब हो जाती है, उस वक्त ये चक्र पकड़ा जाता है। अब मैंने अभी तो कुछ दिन पहले बताया था कि स्त्री में विशेषकर सुरक्षा बड़ी जल्दी खत्म हो जाती है। जैसे कि एक स्त्री है, अच्छी है, सद्गुणी है, लेकिन उसके पुरुष ने, मनुष्य ने उसको सुरक्षा नहीं दी। समझ लीजिए एक औरत है, उसको अपने पति पर शक है, शक ही है समझ लीजिए कि वह अवारा किस्म का आदमी है, किसी और औरत के साथ। उसका ये चक्र पकड़ जाता है, इस वक्त आदमी को बजाए इसके कि उस पर नाराज़ हो उसका फिर से सुरक्षा चक्र ठीक करना चाहिए कि नहीं भई ऐसी बात नहीं, तुम्हारे सिवाय मेरे लिए कोई और चीज़ नहीं। उसके तरीके हैं। उसको सोचना चाहिए कि किस तरह औरत को सुरक्षा दे, बजाय इसके कि औरत से बिगड़े। वो तो खुलेआम औरत के सामने आकर “तुम कौन होती हो बोलने वाली ? तुम हमें टोकने वाली कौन होती हो ? तुम तो बड़ी ये हो, तुम तो बड़ी शक्की हो और जाओ तुम अपने बाप के घर।” सुरक्षा उसका खत्म। आदमी को हमारे हिन्दुस्तान में खासकर लगता है कि वो जो चाहे सोचे ठीक है। वो कभी पाप ही नहीं करता, सारा जो भी chastity है, वो औरतों का ठेका है आदमी को कोई जरूरत नहीं chastity की। ऐसा अपने यहाँ शायद लोगों का विचार है। उसका इलाज जो है कायदे से हो जाता है। जैसे England में आप जाइए तो सब आदमी हमाल हो गए हैं, बिल्कुल हमाल। सुबह से शाम बिल्कुल गधे जैसे काम करते हैं। और घर में आए तो बीबी ने अगर उनको divorce कर दिया किसी भी तरह से तो उनका घर बिक जाता है, आधी property बीबी की आधी आपकी। जिस आदमी ने दो-तीन बार ऐसे किया, उसके साथ हुआ वो तो बिल्कुल रास्ते पर पड़ गया। वो शराब पी पीकर मर

जाएगा और उसकी बीबी जो है उसके पास खूब पैसा हो जाएगा। उसने दो-तीन शादियाँ कर लीं, हो गए। फिर जब बाह्य से, तत्व से नहीं बाह्य से उसका इलाज जो होता है तो वहाँ के आदमी जो हैं आपको विश्वास नहीं होगा कि वहाँ के आदमी जो हैं बिचारे हर समय औरतों के पीछे दौड़ा करते हैं। और वो उनके ऊपर हुक्म जमाती हैं। बर्तन साफ नहीं किये आपने? ऐसे बर्तन साफ किये जाते हैं? "चलो झाड़ू लगाओ। और तुमको झाड़ू लगाना नहीं आता? इस तरह से झाड़ू लगा रहे हो। कभी तुम्हारी माँ ने सिखाया नहीं झाड़ू लगाना? और इस तरह से आदमी हर समय झाड़ू लगाता रहता है।" मैंने देखा अपनी आँख से — आश्चर्य होता है। और सारा बिस्तर उसको साफ करना पड़ता है और सारी सफाई उसे करनी पड़ती है। जरा भी गंदा हुआ, चार आदमी बैठे हैं — चलिये उठाइए, उठो सफाई करने। और इसीलिए वहाँ पर आपने देखा होगा, परदेस में kitchen की जो व्यवस्था संस्था बहुत develop हो गई है क्योंकि आदमियों को करना पड़ता है। यहाँ अगर चक्की चूल्हे करने बैठे तो पता चले। अपने आदमी लोगों को कोई भी काम करना नहीं आता। कोई भी काम। आदमी यों ही गये — की क्या जरूरत है? कोई भी घर का काम करना, कोई भी चीज ठीक से करना, इससे उनको कोई मतलब नहीं। जैसे कि हमने देखा है, जैसे वो विलायत जाते हैं तो उनके छक्के पंजे छूट जाते हैं, आदमियों के। खाना बनाना उनको आता नहीं। बर्तन धोना उनको आता नहीं, झाड़ू हाथ में लेना उनको आता नहीं, कोई काम करना ही नहीं आता। वहाँ तो नौकर कोई होते नहीं। Students खासकर के उनका हाल खराब हो जाता है। कहेंगे माँ की बड़ी याद आ रही है। क्यों? क्योंकि अब यहाँ हमें खाने को

अच्छा नहीं मिलता। मैंने कहा तुम क्यों नहीं बनाते? बोला हमको तो कुछ आता ही नहीं। आदमी हो गए तो निटल्लू, फिर उनको कोई मतलब नहीं। मैं अभी एक — बड़े भारी Secretary साहब हैं education के Sec. हैं — उनसे बात करी। मुझे उनकी बातें सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ उन्होंने कहा कि दस साल के अंदर इस हिन्दुस्तान में सिर्फ औरतें नज़र आएंगी। आदमी सब झाड़ू लगाएंगे। मैंने कहा क्यों? कहने लगे इतने निटल्लू होते हैं आदमी कि students वहाँ हमने देखा कि लड़कों के जो Leaders होंगे वो दुनिया के गुण्डे जो कभी पास नहीं होते, दस-दस साल एक ही class में बैठे हैं, वो उनके Leaders हैं। मैंने कहा। तभी अपने देश का ये नज़ारा दिखाई दे रहा है। और लड़कियों में जो हैं, जो लड़की first आती है class में, जो brilliant है, उसका स्वभाव अच्छा है, जिसमें शाइस्तापन है, और जिसमें कुछ विवेक है, ऐसी लड़कियाँ उनकी Leaders हैं। आप लड़कियों को कोई बात समझाइये तो वो कायदे से समझ जाएंगी, समझ जाएंगी। और लड़कों को कहेंगे तो वो हर समय लट्ट लेकर खड़े हैं। और वो Leaders ही ऐसे बुरे होते हैं, इतने शैतान होते हैं, कि आप उनसे बात नहीं कर सकते, लड़कों को तो ये है कि साहब लड़कियों को तो training ये दो सुबह से शाम ससुराल जाने की, तो उनको तो ससुराल जाना है। और लड़कों को training ये, कि ससुराल जाओ तो मोटर जरूर लेकर आना। तो इस तरह से जब हम किसी भी व्यवस्था के ऊपर उसके तत्व नहीं ढूँढते और उसके तत्व से उसका इलाज नहीं कर रहे हैं तब हमारे अंदर बड़े दोष आ जाते हैं। इसीलिए विवाह का तत्व समझ लेना चाहिए और वो तत्व है कि इसके अंदर हमारी जो पत्नी है, वो हमारी पत्नी है। अपने देश के लोगों से ये कह रहे



हैं, वहाँ ये उल्टा कहना पड़ता है, वहाँ आदमियों की सुरक्षा खराब है, उनकी हालत खराब हो जाती है। लेकिन यहाँ पर जिन औरतों का यह चक्र खराब हो गया है उनको Breast-cancer की बीमारी हो सकती है। तपेदिक की बीमारी हो सकती है। Breast-cancer की बीमारी ज्यादातर इसी से होती है। अब इसकी बीमारी को ठीक अगर करना है, तो उसके मर्द से कहें कि भई अपनी बीवी की सुरक्षा ठीक करो तो मेरी बात नहीं मानेंगे। वो कभी मानेंगे नहीं और Doctor तो उसको ठीक नहीं कर सकते बस वो कहेंगे कि operation कर डालो, काम खत्म। Cancer हुआ काट डालो। नाक काट डालो, कान काट डालो, यहाँ से इनके ये काट डालो। बस Cancer का आदमी चल रहा है, आधी चीज उसकी गायब है। और थोड़ी चीजें हैं, उसके सहारे चल रहा है।

“सहजयोग ऐसी चीज़ नहीं है। सहजयोग तत्व पर उतरता है, इसका कौन सा तत्व खराब है, उसे देखता है, उसे ठीक करता है।”

अभी नाभि चक्र के चारों तरफ जो महान तत्व हमारे अन्दर है, जिसे कि धर्म तत्व कहना चाहिए, उस धर्म तत्व को संभालने वाला जो तत्व है उसका जो आधार है उसका जो मार्गदर्शन करता है, तो 'गुरु-तत्व' है। ये गुरु-तत्व अगर खराब हो जाए तो cancer की बीमारी बहुत आसानी से हो जाती है। सबसे आसान तरीका cancer को अगर खोजना है तो आप किसी गलत गुरु के पास चले जाइए। 5 साल में अगर आपके अन्दर कैंसर न आ जाए देखिये। और मैं दस साल पहले से बता रही हूँ इन गुरुओं के नाम, ये कैसे गुरु घंटाल हैं। इनके पास मत जाओ, ये तुमको नुकसान करेंगे, सब मैं समझा रही हूँ तो सब मुझे ही समझाते हैं कि माँ ऐसा मत कहो तुम

को ये लोग बंदूक चला देंगे, ये लोग मार डालेंगे, फलाना ढिकाना। मैंने कहा कि अगर किसी की हिम्मत हो तो चलाए बंदूक। और नाम तक मैंने बताए सबकुछ बताया, और सब गए, मार खाया और मेरे पास आए। या तो Heart attack आ जाएगा। Heart attack नहीं दिया उन्होंने, इतनी कृपा करके छोड़ दिया तो पागलपन दे देंगे या epilepsy दे देंगे। उस पर भी अगर उनको चैन नहीं आया, तो cancer दे देंगे। सीधे-सीधे ले लीजिये। क्योंकि आपने उनको रुपया चढ़ाया है तो कुछ तो आपको देना ही चाहिए। आखिर आपने इतनी सेवा करी गुरु की। उनकी इतनी जेब भरी है तो कुछ न कुछ आप को मिलना ही चाहिए। और गुरु तत्व जब हमारा खराब हो जाता है, तो इतने तरह के cancer इंसान को हो सकते हैं। मतलब ये पेशानी है, इसको किसी के सामने झुकाने की ज़रूरत नहीं है। हर जगह मत्था टिकाने की ज़रूरत नहीं है। हाँ ठीक है अपने माँ बाप हैं, ठीक है आप टिकाइये। लेकिन किसी को गुरु मानकर उसके आगे माथा टिकाने की ज़रूरत नहीं है। पहले आप को मालूम होना चाहिये, कि गुरु वही जो परमात्मा से आप को मिलाता। अब मेरा उल्टा है। मैं लोगों से कहती हूँ मेरे पैर मत छुओ। छ-छः हजार आदमी मेरे पैर पर सर मारते हैं, ऐसे पैर मेरे फुक जाते हैं। vibrations से मैं कहती हूँ मत छुओ तो नाराज हो जाते हैं माँ दर्शन नहीं देना चाहती। और ये बीमारी लोगों में है, कि किसी ने कहा 'ये आ रहे हैं श्री 108 420, चले सीधे 'साष्टांग' नमस्कार। उसके बाद चक्कर खा कर गिर गए। गुरु ने हमें आशीर्वाद दे दिया है और हम चक्कर खा कर गिर गये और देखा कि 5-6 साल में बराबर पागलखाने पहुँच गए। और दूसरे आदमी देखते भी नहीं कि इस आदमी की

कम से कम तन्दरुस्ती तो अच्छी रहती भाई जिसके गुरु हैं। कम से कम इसको ये तो आराम होता और हजारों की तदाद में, लाखों की तादाद में जा रहे हैं। "आपके गुरु क्या करते हैं कि सातवीं मंजिल पर बैठे हैं ? वो बोलते नहीं। मौनी बाबा हैं। बोलते नहीं।" बोलेंगे क्या ? कुछ इस खोपड़ी में हो तो बोलें। वो बोलेंगे नहीं मौनी बाबा हैं। जाओगे तो चिमटा मार देंगे। चिमटा खाने के लिए लोग सौ-सौ रुपया देंगे। कि मौनी बाबा हैं, जितना वो तमाशा करेंगे उतना अच्छा है। नए-नए तमाशे निकालते हैं। नए-नए तमाशे। हरेक 'गुरु' कोई न कोई तमाशा निकालता है। जैसे एक गुरु ने कहा, एक नया तमाशा निकाला कि तुमको हवा में उड़ना सिखाता हूँ। बच्चों को बहुत समझ में आ रहा है लेकिन बड़ों की समझ में नहीं आता। तीन-तीन हजार पौंड लिए। 'तीन-तीन हजार' पाउण्ड। सोचिये। उड़ना सीख रहे हैं। मैंने कहा नसीब के मारो, तुम्हारे गुरुओं को ही क्यों नहीं उड़ा के दिखाने देते ? पहले उनको उड़वा लिया होता, फिर पैसे देते। उनको खाने को बेचारों को, पहले आलू उबाले। ये भी सीधे लोग हैं बिल्कुल गधे। उबाल करके उनको पानी दिया तीन दिन। कहने लगे पहले तुम्हारा वज़न हल्का करना चाहिए उड़ाने के लिए। वो तीन हजार पाउण्ड में। तीन हजार पाउण्ड माने पता है कितना होता है ? मेरे ख्याल से 60 हजार रुपए। एक-एक से 60-60 हजार रुपए, अच्छा उसके बाद मैं उनको 2 दिन वो लोगों में है, कि किसी ने कहा 'ये जो उसके जो छिलके होते हैं वो खाने को दिए-आलू के। सबको कहने लगे वज़न तुम्हारा बढ़ना नहीं चाहिए। फिर जो सड़े हुए आलू थे वो आखिरी दिन दे दिए। तो उनको फिर diarrhoea लग गया तो कहा ये बहुत ज़रूरी है। इसी से तुम्हारा वज़न घटेगा। फिर

थोड़े दिन उनको उल्टा टांग दिया। टंगे रहिए ! उससे आपका वज़न घट रहा है। फिर उनको foam पर रखा कि इस पर कूदने की कोशिश करिये, जैसे घोड़े पर कूदते हैं उस पर कुदवाना शुरू कर दिया, उसके फोटो ले लिए। छपवा दिया कि हम हवा में चल रहे हैं। "बिल्कुल झूठ, महा झूठ, सफेद झूठ, बिल्कुल झूठ।" और कहने लगे हम चल रहे हैं। बताइए आपकी क्या मोटरें हैं, गाड़ियाँ हैं उसमें चलिए। आप ऐसे ऐसे हवा में चलिएगा तो टक्कर खाइएगा। आप सोचिए कि क्या ज़रूरत है ? क्या अब आदमी को पक्षी होने की ज़रूरत है कि उसको कोई विशेष चीज़-वो 'परम' होना चाहिए। परम दया आनी चाहिए कि ये जब आप गुरु तत्व में अपनी अक्ल खो देते हैं और ऐसे बेवकूफों के पास जाते हैं तो आपका गुरु तत्व खराब हो जाता है, आप सोचते भी नहीं। एक महाशय मुझसे कहने लगे कि माँ मेरी कर्म-गति का क्या होगा ? तो मैंने कहा कि तुम्हारे गुरु क्या कहते हैं ? कहने लगे कि मेरे गुरु ने कहा है कि तुमने जो कर्म किए हैं, जितने पाप किए हैं, उनमें से 1/68 मैं खा सकता हूँ। अच्छा मैंने कहा कौन सा हिसाब लगाया है इन्होंने। और बाकी का कौन खाएगा ? इसका मतलब है कि और अढ़सठ गुरु तुमको दूढ़ने पड़ेंगे भइया। तब जाकर तुम पार होगे, क्योंकि बाकी का कौन खाएगा ? उसकी दुकान कहाँ ? क्योंकि इन्होंने तो अपना 'माल' खा लिया। और किसी के पास recommend करने का तरीका - Doctor लोग होते हैं न। जैसे किसी के पास जाइएगा कि साहब मेरी आँख खराब है। तो कहेगा अच्छा, पहले दाँत examine करवा लाओ। फिर वहाँ सारे दाँत निकाल दिए आपके, फिर उन्होंने कहा पहले अपनी आँख examine करवाओ, आँख में फोड़ा है। सब कर लिया। बाद में पता



हुआ कि आपके कुछ हुआ नहीं। उसी तरह का इन लोगों का हाल है। ये सब आपस की साझेदारी है, इन्होंने कहा कि बस मैं इतना ही लेता हूँ बाकी नहीं लेता हूँ। बाकी उस गुरु के पास जाओ। अगर गुरु दूसरे घायल बैठे हैं उन्होंने बाकी का इनका जितना पैसा था निकाल लिया। पता हुआ रास्ते में खड़े हैं। घर बिक गया, बीवी बच्चे छूट गए। रास्ते में खड़े हुए हैं। बच्चे बेचारे भीख मांग रहे हैं।

जब हम अपनी अक्ल इस्तेमाल नहीं करते तब ऐसे गुरुओं के पास जाते हैं। और इस तरह से सोच लेना कि जो भी काम भगवान के नाम पर होता है, भगवान का काम है, बड़ी गलत बात है। जैसे आज ही हमें एक देवी जी वहाँ पर मिलीं। उन्होंने कहा कि हमारे गुरु पहुँचे हुए पुरुष थे। उसमें कोई शक नहीं। लेकिन यहाँ बैठकर वो घंटा बजा रही हैं कि हम तो गुरु के शरण में हैं। हम तो गुरु के शरण में हैं। तो मैंने कहा कि फिर ? तो कहने लगी अब तो मैं पार हो गई माँ। मैंने कहा अच्छा। अपना ही सर्टिफिकेट, अपना ही सबकुछ ? कैसे पार हो गए बेटा तुम ? मैं तो गुरु के शरण में चली गई, मैं तो पार हो गई। मैंने कहा कि ऐसा तो 'मेरी भी शरण' में आने से नहीं हो सकता। अब मैं तो जिन्दा बैठी हूँ। तुम्हारे तो गुरु मर गए लेकिन तुम कहो कि माँ हम तुम्हारे शरण में हैं, हमें पार कराओ। 'थोड़ी तुम्हारी भी पूंजी लगती है और कुण्डलिनी का जागरण लगता है पार होने का काम है जब तक आप पार नहीं हुए तब तक 'माँ तेरी शरण में हम आए' कुछ नहीं काम बनने वाला, बेटा। साफ-साफ बता दूँ बेटा, पार होना पड़ता है। जब तक आप पार नहीं हैं, तब तक सब बातें बकवास हैं, बेकार हैं कि मैं तुम्हारी शरण में आया हूँ और ये है। अरे ये तो सब आपने

अपनी तरफ से कह दिया कि मैं शरण में आया लेकिन मुझे शरण में आना पड़ेगा न। 'काम तो मुझको करने का है।' मेरे हाथ से काम होना चाहिए। जब तक मेरे हाथ से काम नहीं बनेगा तब तक तो बेकार ही चीज हो गई न और ये साफ-साफ मैं बता देती हूँ कि जो पार नहीं वो पार नहीं और जो पार हैं वो पार हैं। उसमें कोई झूठा certificate तो कोई दे नहीं सकता। चाहे आप मेरे से लड़ाई करो, झगड़ा करो, कुछ करो, मैं क्या करूँ ? नहीं वो तो नहीं हुए, हुए तो हुए। सीधा हिसाब इसका होता है कि मेहनत हम लोग कर सकते हैं लेकिन पार नहीं कर सकते "कोशिश हम कर सकते हैं। प्यार हम दे सकते हैं। सब कर सकते हैं, 'आपको' होना होगा।" जैसा कि हम खाना बना सकते हैं, बढ़िया खाना बना सकते हैं, लेकिन आपके अगर जीभ ही नहीं हो, तो हम खिलाएँगे क्या और आप समझिएगा क्या ? आपकी जीभ जो है जागृत होनी चाहिए जो समझे कि माँ ने बना के खिलाया है। खाना तो आपको है या मैं आपके लिए खाना भी खा लूँ।

ये समझ लेना चाहिए जो तत्व एक ही है कि जो आप को गुरु सिर्फ परमात्मा से ही मिलता है। जो परम् में उतारता है वो ही गुरु है और कोई भी गुरु नहीं है। सब अन्धे हैं और अन्धा अन्धे को कहाँ ले जा रहा है भगवान ही जानता है ! ऐसे शरण गति से कुछ नहीं। शरण गति तो सिर्फ पार होने के बाद ही शुरू होती है। उससे पहले की शरण गति कुछ नहीं। आपने देखा होगा कि पार किए बगैर मैं पैर पर किसी को लेना नहीं चाहती। क्योंकि क्या अर्थ है इसमें। आप जब पार ही नहीं हुए तो मैं क्या करूँ ? पार तो होना पहले ज़रूरी है। हाँ ये बात ज़रूर है कि कई लोग पैर पर आने से ही पार हो जाते हैं। तो ठीक है। लेकिन कोई

शरण गति की ज़रूरत नहीं है उस वक्त। शरणागत बाद में होना चाहिए। शरणागत जब आप होते हैं तब कम से कम शरण में आने के लिए वो 'आत्मा' को होना चाहिए, प्रकाश तो होना चाहिए। बगैर प्रकाश के आप मेरे भी पैर पर मत आइए। पता नहीं शायद मैं भी 420 108 हूँ। क्या पता ? अगर मैं हूँ तो आप कैसे जानिएगा कि हूँ या नहीं ? बेकार की बकवास भी कर रही हूँगी तो आप कैसे जानिएगा? कभी भी आप जब तक पार नहीं होते आप मेरे पैर पर मत आइए। और इसीलिए मना किया गया था कि किसी के सामने बंदगी नहीं करना चाहिए, बंदगी उसी के सामने करना चाहिए जो परमात्मा से आपको मिलाए। जब तक ये घटना आप में घटित नहीं होती तब तक आपको बिना तत्व के कोई भी चीज़ को मानना नहीं चाहिए। इसलिए जो हमारा सुरक्षा का तत्व है उसके बारे में मैंने आपको बताया। कल बाकी के तत्वों के बारे में बताऊँगी। आज काफी लंबा चौड़ा विवरण दिया है। और मुझे एक बात की बहुत खुशी हुई क्योंकि सबने कल कहा था कि कल सिनेमा है तो कोई नहीं आएगा मॉँ Programme में और मेरे पति आज ही बेचारे London जा रहे थे लेकिन उनको ऐसे ही छोड़कर मैं चली आई, Airport भी नहीं गई। मैंने कहा नहीं, जाना चाहिए, हो सकता है कोई लोग तो आएंगे ही और इसलिए मैं आई और मुझे बड़ी खुशी हुई कि आप लोग अपना 'सिनेमा' छोड़ कर भी यहाँ आए, अपने तत्व को ज्यादा महत्व दिया और इसीलिए मैं बहुत आज खुश हूँ। परमात्मा की कृपा से आज आप पार हो जाइएगा तो कल बड़ा मज़ा रहेगा और कल सब को लेकर यहाँ आइएगा। आपको मैंने वहाँ हल्के फुल्के तरीके से समझाया, कोई चित्त पर seriousness नहीं आना चाहिए। लेकिन इसका

मतलब नहीं कि बचकानापन आना चाहिए। इसकी गंभीरता तो है लेकिन 'लीला' है। ये सारी लीला है। इसलिए बिल्कुल शांतचित्त होकर के दोनों हाथ मेरी ओर करें। और चित्त को एकदम हल्का करें।

इसलिए तत्व की बात करते हुए मैंने उसको इतना सादगी से बताया और इतने हल्के-फुल्के तरीके से बताया कि वो बड़ी गहनता और गम्भीर बात है। जिससे आपके ऊपर उसकी गहनता न छा जाए। क्योंकि जो गहनता है वो पाने की चीज़ है। वो पाने की चीज़ है उससे दबता नहीं जाता आदमी। उसमें बहकता नहीं है। उससे दबता नहीं है ? उसमें पनपता है।.....

अधिकतर लोग पार हो गए हैं मेरे ख्याल से। पार होते वक्त आप देखिएगा आपके अन्दर ठंडी हवा सी आएगी। और निर्विचार हो जाएंगे। अपने को निर्विचार रखने का प्रयत्न करें। ..... आँख बंद रखें-बिल्कुल-थोड़ी देर। मज़ा उठाएंगे अपना।..... सारे पार

विषय बहुत गहन था लेकिन तो भी आप लोग पार हो गए। मैंने आज तक बात नहीं की। आज पहली मर्तबा तत्व पर बात की। ..... बस अठखेलियाँ करते हुए तत्व को पा लेना चाहिए। .....

..... सूक्ष्म है, इसलिए सूक्ष्मता से देखें आपके हाथों में ठंडी हवा सी आने लगेगी। यही पाने का है। सब जीवन का उद्देश्य बस यही है। इस ब्रह्म तत्व को पाएं जो कि आत्मा का तत्व है। आत्मा का तत्व-ब्रह्म-तत्व, जो कि आपके हाथ से लहरों की तरह बह रहा है। .....

**परमात्मा आपको धन्य करें**



# MARATHI TRANSLATION

## (Hindi Talk)

Scanned from Marathi Chaitanya Lahari

काल मी तुम्हाला सांगितले होते की आज तत्वाबद्दल सांगेन. जेव्हा आपण एखाद्या झाडाकडे पाहतो, तेव्हा आपल्या हे लक्षांत येते की त्याचे मध्ये कोणती तरी शक्ती प्रवाहित व प्रभावित आहे की जिच्यामुळे तो वृक्ष वाढतो व पूर्णत्वाच्या स्थितीला पोचतो. ही शक्ती त्याच्या मध्ये नसेल तर हे कार्य होऊ शकत नाही. पण ही शक्ती त्याने कशी मिळविली ? त्याचे तत्व, मर्म काय आहे ? जे बाह्यांत दिसून येते ते झाड, त्याची फळे-फुले-पाने दिसतात; हे काही तत्व नव्हे. ते त्या सर्वांपेक्षा सूक्ष्म आहे. त्या सूक्ष्माला तर आपण बघू शकत नाही. ते जर साकार असते तर दिसले असते. परंतु ते निराकार स्थिती मध्ये आहे. याचा अर्थ त्याच्यात असलेली पाणी, जरी ते वहात असले तर ते तत्व नाही. पाणीच त्या शक्तीला आपल्यातून वहात असते. म्हणजे जर पाणी तत्व आहे असे धरले तर दगडावर पाणी टाकल्याने काही झाडे उगवत नाही. तर तत्वाबद्दल हे लक्षांत घेतले पाहिजे की प्रत्येक गोष्टीचे आपले - आपले तत्व असते. पाण्याचे आपले तत्व आहे. वृक्षाचे आपले तत्व आहे. दगडाचे सुद्धा तत्व आहे. त्याच प्रमाणे मानवाचे सुद्धा आपले तत्व (Principle) आहे ज्याच्या आधारावर तो सर्व व्यवहार करीत असतो. मोठा होत असतो व त्याच्या ध्येयाची प्राप्ती होत असते.

हे तत्व एकच असू शकत नाही. जसे मी सांगितले की जर पाण्याचे तत्वाने झाड निघत असेल तर दगडातून ते कां येत नाही ? जर बीज जल तत्वामुळे संगोपले जात असेल तर ते पृथ्वी मातेला कां शरण जाते ? पृथ्वी मातेमुळेच जर सर्व कार्य होत असेल तर हा दगड आहे तो मोठा का होत नाही ? याचा अर्थ असा की अनेक तत्वामध्ये एक तत्व

आहे. पण तत्वे अनेक आहेत. ही जी अनेक तत्वे आहेत. निरनिराळ्या चक्रांवर त्यांचा वास आहे. पण ती एका शरिरांत समाविष्ट आहेत आणि एकाच दिशेने त्यांचे कार्य चालू आहे. त्यांचे ध्येय एकच आहे. आणि एकच गोष्ट त्यांना मिळवायची आहे. जस मूळाधार चक्रावर श्री गणेशाचे तत्व आहे. गणेश तत्वामुळे आपण पृथ्वीला धरून आहोत. फेकले जात नाही. पृथ्वी इतक्या जोरात फिरत आहे की जर आपल्यामध्ये गणेश तत्व नसते तर पृथ्वीवर आपण टिकलो नसतो. पृथ्वीला चिकटून राहू शकलो नसतो. कोणी म्हणेल की माताजी, पृथ्वीच्या आंत सुद्धा गणेश तत्व आहे ? ही गोष्ट खरी आहे. पृथ्वीच्या गणेश तत्वाच्या योगानेच आपण पृथ्वीला धरून आहोत. परंतु पृथ्वीचे आंत जे गणेश तत्व आहे ते पृथ्वीचा जो (axis) आहे त्यावर गणेश तत्व स्थित आहे. खरं म्हणजे (axis) वगैरे काही नाही. परंतु अस समजलं जात की ही जी शक्ती आहे ती ह्या (axis) वर सरळ रेषेवर काम करते. अगदी मधोमध ही शक्ति असते. तर हे तत्व आपल्यामध्ये कोणत्या स्वरूपात असते ? ह्या तत्वामुळे आपल्याला दिशांचे ज्ञान होते. प्राण्यामध्ये हे तत्व जास्त असते. पक्षामध्ये हे फारच जास्त असते. कारण ते अगदी भोळे जीव असतात. त्यांच्यामध्ये कपट वगैरे काही नसते. ते विचार करू शकत नाहीत, त्यांच्यामध्ये विचार करण्याची शक्ति नाही. ते पुढचा विचार करू शकत नाहीत मागचाही नाही. समोर जे येईल त्याच्यावर ते काम चालवतात. मागच्या गोष्टींचा ते अजिबात विचार करत नाहीत. तुम्हाला आश्चर्य वाटेल तुम्ही बघा की एखादे माकड जोपर्यंत मरत नाही तोपर्यंत इतर माकडे आरडा ओरडा करतात. परंतु जसं ते मरेल तसे त्याला ते



सोडून पळून जातात. ह्याचा अर्थ सर्व संपले. आता तो मेल्याचा अर्थ एखाद्या दगडासारखा झाला त्याचा आता काही उपयोग नाही अगदी निरर्थक झाला. परंतु हळू हळू त्याला जसा अनुभव येतो तसा जरूर परिणाम होतो. जस तुम्ही वाघाला पकडण्याचा प्रयत्न केला. दोन चार वेळा त्याला जाळ्यात पकडले की मग कळते की येथे काहीतरी गडबड आहे. बऱ्याचशा गोष्टी ईश्वरानेच दिलेल्या असतात. परंतु काही तो स्वतःच शिकतो. माणसाकडून पण तो बरेच शिकतो. पण त्याच्यामध्ये परमात्म्याने दिलेल्या गोष्टी बऱ्याच आहेत. त्यामुळे त्याला स्फूर्ती येते. जसे जपान मध्ये असे पक्षी आहेत, जेव्हा ते उडतात किंवा जास्त दूर जातात तेव्हा लोकांना हे कळतं की भूकंप होणार आहे. कारण त्या पक्षांना गडगडाटीचा आवाज बराच आधी ऐकू येतो. जनावरांना सुद्धा आवाज माणासापेक्षा जास्त आधी ऐकू येतो. त्यांचेकडे ऐकण्याची शक्ति जास्त असते. पाहण्याची जास्त असते. जर एखादी घर उंचावरून बघेल तर तिला लगेच लक्षात येते की तो माणूस जिवंत आहे की मेलला आहे. या सर्व इंद्रियांच्या आंत शक्ति आहेत. त्या प्राण्यांमध्ये माणासापेक्षा जास्त आहेत. सर्वात मोठी शक्ति त्यांच्यामध्ये असते. जी गणेश तत्त्वामुधे मिळते. ती म्हणजे दिशांचे ज्ञान. कोणत्या दिशेला जावयास पाहिजे. मी कालच तुम्हाला सांगितले की पक्षी जेव्हा सेबेरियातून येतात तेव्हा या शक्तचे योगानेच त्यांना हे समजते की ते दक्षिण दिशेला जात आहेत, की पूर्वेला की पश्चिमेला की उत्तरेला. परंतु जसे जसे गणेश तत्त्व कमी होत जाते तसे तसे दिशांचे ज्ञान समाप्त होत जाते. दुसरीकडे मनुष्य प्राणी जेव्हा फार विचार करू लागतो की मी हे करू का ते करू, ह्याच्यात किती फायदा होईल. ह्याच्यात पैसे गुंतवावे का न गुंतवावे अशा सारख्या निरर्थक गोष्टीमध्ये आपले चित्त बांधाळालावितो तेव्हा त्यांचे दिशांचा अंदाज कमी होतो. त्याला तुम्ही एका दिशेला उभे करा आणि सांगा की तुला उत्तरेकडे जायचे आहे, थोड्या वेळात तो तुम्हाला दक्षिणेकडे जाताना दिसेल. रस्त्याचे ज्ञान त्याचेकडे रहात नाही. जर त्याला तुम्ही कुठे उभे केले आणि विचारले की रात्री पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण सूर्य नसतांना कसे शोधाल. जेव्हा अशा प्रकारे तुमचे चित्त जास्त बाहेर जाऊ लागते किंवा तुम्ही दुसऱ्याच्या चलाखीमुळे फसले जाता अथवा चलाखी करून दुसऱ्याला फसवू पाहतां. दोन्ही मुळे हे होऊ शकेल. एक तर तुम्ही भयभीत असाल

की कोणीतरी चलाखी करून तुम्हाला खाऊन टाकेल. अथवा तुम्ही कोणाच्या तरी मागे लागून चलाखी करून त्याला कसे बुडवावे ह्याचे मागे आहात. ह्या दोन्ही परिस्थितीत तुमची अबोधिता (Innocence) कमी कमी होत जाते. जेव्हा अशी परिस्थिती येते तेव्हा तुम्हाला दिशांची जाणीव होत नाही. एक साधी गोष्ट. तुम्ही रागावू नका. मी आजकाल बघते की पूर्वी मुलींमध्ये अबोधिता होती परंतु त्यांचेमध्ये सुद्धा आता ती नाही. विशेषतः दिल्ली शहरामध्ये आजकाल त्या प्रत्येक पुरुषाकडे नजर उचलून बघू लागल्या आहेत. पूर्वी फक्त पुरुषच बघत असत. आजकाल स्त्रियांनी सुद्धा हे सुरू केले आहे. आता तुम्हाला असे वाटते की ही फार साधी गोष्ट आहे. ह्यांत अस विशेष काय आहे ? अशा तऱ्हेने प्रत्येक पुरुषाकडे बघणे जरूर आहे कां ? लोक म्हणतील की मातजी शिष्टाचाराबद्दल सांगताहेत. परंतु हे फार गहन आहे. जेवढे तुम्ही बघाल तेवढे तुमचे चित्त बाहेर जाईल. जितकी तुमची दृष्टी बाहेर जाईल तितके तुमचे मूलाधारचक्र खराब होईल. बऱ्याच लोकांना ही सवय असते. प्रत्येक जाहीरात वाचण्याची की विशेषतः अशा तऱ्हेच्या गोष्टीकडे बघण्याची किंवा रस्त्यांत असलेल्या प्रत्येक गोष्टीकडे जर एखादी गोष्ट बघण्याची चुकून दिसली नाही तर मागे वळून लोक ती बघतील. बाजारांत दिसणारी प्रत्येक गोष्ट जणू काय बघितलीच पाहिजे. हे काय आहे, ते काय आहे, वगैरे. डोळ्याचा आपल्या मूलाधार चक्रांशी फार जवळचा संबंध आहे. डोळ्याच्या मागच्या बाजूस सुद्धा आपले मूलाधार चक्र आहे. त्याचा परिणाम आपल्या डोळ्यावर होतो. म्हणून जे लोक आपले डोळे इकडे तिकडे सतत फिरवित असतात त्यांना मी सूचना देऊन ठेवते की त्यांचे मूलाधार चक्र फार खराब होत जाते आणि अजब अजब प्रकारचे त्रास त्यांना सहन करावे लागतात. सर्वात प्रथम असे होते की अशा व्यक्तींचे चित्त स्थिर रहात नाही. कारण तो आपली दिशा विसरला. इकडे तिकडे हळू हळू पहाणे हे सुद्धा दिशाभूल असण्याचे लक्षण आहे. ज्या मनुष्याला कोठे जायचे आहे हे माहित आहे तो सरळ चालतो. आपली दिशा विसरणे फक्त मनुष्यालाच शक्य आहे. जनावराला नाही कारण, त्याने दिशा विसरावी असे काहीही कारण घडत नाही. समजा एखाद्या प्राण्याने दुसऱ्या एका प्राण्याला मारून टाकून दिले. त्याला माहित आहे की त्याने कोठे टाकून दिले आहे, त्याला त्याचा वास येईल



आणि सर्व समजून येईल की पक्षाला कोठे मारुन टाकले आहे. व बरोबर तो वेळेवर त्या जागेवर पोहोचेल, चुकणार नाही. जर तुम्हाला एखाद्या मांजराला घराबाहेर काढायचे असेल तर सात मैल दूर जावून त्याला सोडून दिले तरी सुध्दा कदाचित ते परत येईल. कुत्र्याचे तर काय सांगावे त्याने अशा तऱ्हेने वास घेऊन फिरल्यावर लगेच त्याला कळते की चोर कुठे सापडेल. आणि कुठली गोष्ट घेवून कुठे ठेवली आहे. परंतु मनुष्यामध्ये ही वास घेण्याची शक्ति सुध्दा नष्ट होऊन जाते. त्याला घाणीची दुर्गंधी होईल पण पापाची येणार नाही. त्याला तो वास समजणारच नाही. जे पाप आपल्यामध्ये बसलं आहे आणि जो महापापी माणूस आहे त्याचे शेजारी आपण उभे आहोत तरी सुध्दा त्याला घाणीची दुर्गंधी येईल. परंतु ह्या महापापी माणसाची दुर्गंधी त्याला येणार नाही. आणि तो महापापी कोणीही असो मंत्री अथवा आणखी कोणी त्याची खुशामत करण्यास ह्या व्यक्तिला काहीही वाटणार नाही. गणेश तत्व खराब झाल्याने असे म्हणावे लागेल. माणसाचे सर्व अस्तित्वच खराब होऊन जाते. कारण गणेश तत्वावर चंद्र वर्षाव करत असतो. चंद्र जेव्हा खराब होतो तेव्हा त्या मनुष्याला वेडेपणाचा (Lunacy) आजार होतो. तो वेडा होतो, वेडेपणाचे काय, वास्तविक त्याचे असे होते की, जेव्हा मनुष्य आपले डोळे भिन्नभिरवित ठेवतो, तेव्हा स्वतःचे चित्तावर त्याला नियंत्रण ठेवता येत नाही. अशा स्थितीत एखाद्या दुष्ट आत्मा त्याचेवर आघात करू शकतो. परदेशांतील लोकांना मी सांगितले की, हे डोळ्याचे तुम्ही काय आरंभिले आहे ? येशूने स्वच्छ शब्दांत हे लिहून ठेवले आहे "Thou Shall not Commit adultery पण मी म्हणून I would say "Thou Shall not have adulterous eyes".

अशा तऱ्हेने आपण आपले गणेशतत्व खराब करीत असतो. आणि ज्याचे गणेश तत्व खराब होते त्याची कुंडलिनी टिकू शकत नाही. ती पुन्हा खाली खेचली जाते. कुंडलिनी कितीही प्रयत्नांनी वर उठू दे. श्रीगणेश, एखाद्या रिळाप्रमाणे ती खाली ओढून घेतात. कुंडलिनी वर चढत नाही आणि चढली तरी खाली बसते. एखादा चोर, लबाड असू दे, परमात्म्याचे दृष्टिने फार मोठा गुन्हेगार ठरत नाही. सरकार पासून काही चोरून ठेवले, समजा एखाद्याने आपले (Income) उत्पन्न सरकार पासून लपविले, आपलीच कमाई

आहे तेव्हा या बाबतीत हे ठरविणे कठीण आहे की सरकार चोर आहे की ज्याचेकडून उत्पन्ना वरील कर वसूल केला जातो तो चोर आहे. परंतु ज्याची दृष्टि स्त्रीचे बाबतीत शुध्द नाही, तो परमात्म्याचे दृष्टिने अत्यंत वाईट माणूस होय. स्वतःची पत्नी सोडून इतर सर्व स्त्रियांकडे शुध्द दृष्टिने पाहिले पाहिजे. आजकाल लोकांचा विश्वास बसत नाही. की पूर्वी लोकांचे वागणे असे होते. माझ्या बरोबरीचे सर्व लोक असेच वागताना मी बघितले. परंतु आतां पहावे तो वृद्ध स्त्री-पुरुषांचा सुध्दा सत्यानाश झाला आहे. या वयांत आपल्यापेक्षा तरुण ते लोकाकडून या गोष्टी शिकले व वाया गेले. तरुण लोकांपदांही ते जास्त वाया गेले आहेत. कळत नाही की या लोकांना केव्हा अक्कल येणार. जेव्हा मी तरुण होते तेव्हा असा प्रश्न उद्भवलाच नाही. मी कोठेही एकटी जात असे. पंजाब मध्ये मी राहिले आहे. कोणाचीही अनादर करण्याची हिंमतच नव्हती. लोकांनी फाडून खाल्ले असते. विशेषतः सरदारजी लोक, एखाद्या स्त्रयीकडे वाईट नजरेनी पाहिले तर रक्तापात होण्यापर्यंत पाळी यायची. आज अशी स्थिती आली आहे की कोणाची कोणाला पर्वाच राहिली नाही. हे कशामुळे झाले ? लोकांचे चित्तच ठिकाणावर नसते. पन्नास वर्षांपूर्वी असे नव्हते. चाळीस वर्षांपूर्वी सुध्दा नव्हते. आमच्या नजरेतील लाज-लज्जा सगळी कोठे गेली आहे ? कोणी लाज पाळा असे सांगत बसते कां ? ते सर्व अंदाजानेच होत असते. माणसांना सर्व जाणीव असे. पूर्वी लोक असे वागत असत. आता जास्त शहाणे झाले आहेत ना !

असे वागून आपण आपले गणेश तत्व घालविले आहे व त्याबरोबर सर्वच घालवून बसलो आहोत. काल तुम्ही विचारले म्हणून हे सांगितले, अन्यथा लोक रागावतील म्हणून मी कधी बोलत नाही. पण आजकालचे हे वातावरण अतिशय वाईट आहे, नुकसानकारक आहे. सर्व तऱ्हेची बेशिस्त, अनादर, दुष्टपणा, इत्यादी वाईट प्रवृत्ती आमचेमध्ये येत आहेत. अशा वागण्याने आता स्त्रिया सुध्दा जर अशा वागू लागल्या तर पुरुषांची स्थिती कशी असेल ? पुरुष तर पुरुषच आहेत. पण स्त्रियासुध्दा जगांत असे वागू लागल्या तर परमात्म्याचे राज्य येणे फार अवघड आहे. आज काल ह्या जगांत गुरू सुध्दा असे झाले आहेत की ते शिकवितात की असे धंदे करा म्हणजे परमेश्वर मिळेल. लोकांच्या अशा



वागण्यामुळे ते अशा गुरुंच्या हातात सापडतात व त्यांना फावते ह्या ठिकाणी जितके लोक बसले आहेत. त्याच्या दहापट जास्ती गुरु लोकांकडे जातील. मी सांगते त्या गोष्टी कोणालाही आवडत नाहीत, मग तुम्हाला जे करावयाचे आहे ते करा तुमचे गणेश तत्व नष्ट करा आणि तुमच्यातील श्री गणेश झोपतील कुंडलिनी तत्व हे काही विज्ञानाचा विषय नाही. तो पावित्र्याचा विषय आहे. पवित्र वृत्तीचे (Holiness) लोक मला म्हणतात. पण जेव्हा मी (her holiness) पावित्र्याबद्दल सांगते तेव्हा त्यांच्या लक्षातच येत नाही की ह्या दिवसात कोणताच गुरु पवित्र व्हायला सांगत नाही. आणि माताजी मात्र अजब आहेत आणि सुरुवातीलाच त्या सांगतात की तुम्हांला पावित्र्य राखले पाहिजे. बहुतेक गुरु असेच सांगतात की तुम्हाला हवे ते करा फक्त पैसा येथे आणून द्या. ते एवढेच बघतात की तुम्ही पैसा दिला की नाही. कुंडलिनी जागृती एक सत्य Reality आहे. वास्तविकता (Actualisation) आहे. त्याच्याकरता मनुष्याने पवित्र असणे आवश्यक आहे. जर तुम्ही पवित्र नसाल तर तुम्हांस कुंडलिनी जागृतीचा अधिकार मिळू नये. तरी सुद्धा आईच्या नात्याने आपला मुलगा इतका वाया गेलेला आहे हे आईला पटतच नाही, तिच्याकरिता सर्वच अवघड होऊन बसते. कारण तिला ते सर्व लांछनास्पद वाटते. म्हणून, आपली सारी पुण्याई पणाला लावून हे सांगते की पूजा वगैरे करत जा. तुम्हांला आवडो अथवा न आवडो पण तुम्हांला हे लक्षात घेतले पाहिजे की पार झाल्यानंतर तुमच्या जीवनांत पावित्र्य आणणे आवश्यक आहे. ह्याचा अर्थ असा नाही की तुम्ही संन्यासी बनावे. संन्याशांना सहजयोग अजिबात मिळणार नाही. माझ्या सांगण्याचा उद्देश असा नाही की तुम्ही अनैसर्गिकपणाने रहा. त्यामुळे मनुष्य फार शुष्क होऊन जातो. ते सुद्धा चालणार नाही. सहजयोगात मंगलमय वैवाहिक जीवनाला आशिर्वाद आहेत. सहजयोगात सुद्धा विवाह होतात आणि ते बहुतेक सर्व लाभदायी झाले आहेत. आमच्या येथे सहजयोगातर्फे विवाह होतात व त्यामुळे फारच लाभ होतो. विवाह एक मंगलमय कार्य आहे. आणि तुम्हांला माहित आहे की त्या मध्ये आपण श्री. गणेशाची स्तुती करतो. जर तुमच्या मध्ये पावित्र्य नसेल तर तुम्ही परमात्म्याबद्दल बोलू शकत नाही. म्हणून बरेच लोक विचारतात की माताजी आमच्या कर्म फळाचे काय होणार आणि आमचे कर्म चांगले आहे. कां नाही? माझ्यासमोर अशा गोष्टी अजिबात करावयाच्या

नाहीत. कारण आईकरिता कोणतेही काम अवघड नाही. तिची नावेच आहेत पापनाशिनी वगैरे, तर मग अवघड काय आहे? परंतु पार झाल्यानंतर हे लक्षांत ठेवले पाहिजे, की सर्व गुन्हे पार होईपर्यंतच माफ आहेत कारण तुम्ही पार झाला नव्हता आणि अंधःकारातच होता. काहीही असो पण त्यानंतर मात्र हे लक्षांत ठेवले पाहिजे. की आपल्या गणेश तत्वाला तुम्ही सहजरित्या जागृत करू शकता. जर हे पाश्चिमात्य लोक टिकून राहिले आहेत तर तुम्ही कां नाही टिकणार? जर ह्या लोकांनी सुद्धा पावित्र्य म्हणजे काय हे शिकून घेतले आहे तर तुम्ही भारतीय लोक शिकणार नाही काय? अजून तरी मला एक सुद्धा भारतीय माणूस असा भेटला नाही. की ज्याला अपवित्र होणे आवडते. ते तसे वागतात पण हे लक्षातही ठेवतात की ते चुकीचे आहे. तो गुन्हा आहे. कोणताही भारतीय असो परदेशात राहणाराही असो तो वागतो पण हे लक्षांत ठेवतो की ते चुकीचे वागणे आहे. परंतु ह्या विचार्यांना ते चुकीचे वागतात हे माहित सुद्धा नसते. त्यांना वाटते की ते फार चांगले काम करत आहेत. आणि ते म्हणतात सुद्धा की असे वागलेच पाहिजे कारण त्या शिवाय त्यांचे कल्याण नाही. इतके ते मूर्ख आहेत या बाबतीत म्हणजे अगदी साधे भोळे आहेत. तरी सुद्धा ते वाचले. तुम्ही ठीक व्हाल. परंतु तुमच्यावर जबाबदारी आहे. गणेश तत्वाला, जसे श्री. गणेश आहेत, तसे जोपासले पाहिजे. मूलाधार चक्र कोठे आहे ते पहा. जेथे उत्सर्जन होते त्या स्थानावर श्री गणेशांची स्थापना केली आहे. ते सर्व काम श्री गणेश करतात. जसे चिखलांत कमळ असते तसे श्री गणेश आहेत. आपल्या सुगंधाने ते सौरभ इतके पसरवितात की चिखल सुद्धा सुगंधमय होऊन जातो. तुम्हाला आश्चर्य वाटेल जसे तुमचे गणेश तत्व प्रस्थापित होऊ लागेल तसा तुम्ही कधी अनुभव घेतला नसेल की कल्पना केली नसेल इतका आनंद तुमच्या आत तुम्हाला होऊ लागतो कारण ह्याचे तत्व निर्मल आहे. त्या तत्वाचा अर्थच निर्मलता आहे. जी गोष्ट निर्मल आहे. म्हणजे तत्वामध्ये त्याचा सर्व मळ निघून जातो. आणि तेच निर्मळ असू शकते की जे आपल्या मध्ये कोणताही मळ राहू देत नाही. जे निर्मळ करते ते तत्वच असते कारण तत्वाला कोणतीच गोष्ट चिकटू शकत नाही. कायम ते तत्वच रहाते म्हणून, सर्वात प्रथम आपण गणेशाचे आवाहन करतो आणि त्यांची भक्ती करतो. परंतु सध्या असे लोक आले आहेत की,



कुंडलिनीच्या नावाखाली श्री गणेशाचा सकाळ पासून संध्याकाळ पर्यंत अपमान करीत असतात. इतका अपमान करतात की, मी ते सांगू शकत नाही. कुंडलिनी त्यांची आई आहे आणि ती ही कुमारी स्वरूपात कन्या स्थितीमध्ये जेव्हा पतीचे स्वागत करण्याची वेळ आली ती आंधोळीस गेली होती म्हणजे त्यांचा विवाह झाला होता परंतु पतीची भेट झाली नव्हती. तर जेव्हा ती आंधोळीला गेली होती तेव्हा त्यांनी श्री गणेशाला निर्माण करून नहाणी घराचे बाहेर ठेवून दिले. ही खरी गोष्ट आहे. दुसऱ्या अर्थात किंवा दुसऱ्या (Dimention) मध्ये असे की, त्याने आपल्या आईचे रक्षण करावे तिच्या प्रतिष्ठेचे रक्षण करावे. कारण ती Virgin कुमारी आहे. अशा प्रकारे आपल्यामध्ये जी गौरी स्वरूपा कुंडलिनी आहे. ती अजून Virgin आहे. त्याचे त्यांच्या पतीबरोबर अजून मिलन झालेले नाही. त्याचे पती आत्मा स्वरूप शिव आहेत. आणि त्या दरवाजापाशी श्री गणेश बसलेले आहेत. त्या दरवाजा मधून श्री. शंकर सुद्धा आत जाऊ शकत नाहीत इतका तो पवित्र दरवाजा आहे. आणि हे दुष्ट लोक, त्यांना मांत्रिकाकडून म्हटले पाहिजे, कुंडलिनी मातेच्याकडे त्या बाजूने जाण्याचा प्रयत्न करतात त्यामुळे त्यांना प्रत्येक प्रकारचा त्रास होतो. ज्या माणसामध्ये पवित्र्य नाही. त्याला कुंडलिनी जागृत करण्याचा अधिकार नाही. जर अशी व्यक्ती प्रयत्न करेल तर गणेश त्यांच्यावर नाराज होतील. आणि परिणामतः त्यांच्यामध्ये अनेक प्रकारच्या विकृती निर्माण होतील. मी ऐकले आहे की, काही लोक ओरडू लागतात काही नाचू लागतात काही भ्रमिष्टा सारखे वागतात. आणि काही जनावरासारखे आवाज करतात. मी पाहिले आहे. काहींचे अंगावर फोड येतात. कारण अशा अपवित्र लोकांचे कडे गेल्यामुळे की, जे अपवित्र आहेत आणि जे कुंडलिनीला चुकीच्या मार्गाने व चुकीच्या रस्त्याने जागृत करण्याचा प्रयत्न करतात, त्याचेवर स्वतः साक्षात श्री गणेश रागावतात. त्या साधकाला फार त्रास होतो. सर्व तांत्रिक शास्त्र श्री गणेशांना नाराज करून मिळवतात. ज्यांना लोक तांत्रिक समजतात ते खरे तांत्रिक नाहीत. खरे खरे निर्मल तंत्र, हा सहज योग आहे. कारण तंत्र म्हणजे कुंडलिनी, यंत्र म्हणजे कुंडलिनी आणि ते शास्त्र फक्त सहज योगातच शिकता येते. बाकी जे तांत्रिक आहेत, ते परमात्म्याच्या विरोधी आहेत. देवीला, श्री गणेशांना नाराज करून, त्यांचे समोर व्यभिचार करून, असे

वातावरण तयार करतात की जेथे ते आपली दुष्कृत्ये करू शकतात. जेथे ते स्मशान विद्या, भूत विद्या वगैरेचे खेळ करून लोकांना भ्रमांत पाडतात. हे लक्षात ठेवले पाहिजे की, ज्यांचे गणेशतत्व ठीक आहे. त्यांचेवर कोणताही तांत्रिक हात उचलू शकत नाही, मग त्याने कितीही प्रयत्न करू दे. ज्यांचे गणेश तत्व ठीक आहे त्यांचे केसाला सुद्धा कोणी धक्का लावणार नाही. म्हणून जे काही गणेश तत्व आहे, ते संरक्षणाचे तत्व आहे.

सर्वात जास्त संरक्षण गणेश तत्वामुळे होते. म्हणून आपल्या गणेश तत्वाला फारच संभाळून ठेवले पाहिजे. प्रथम आपली नजर खाली ठेवा. लक्ष्मणा सारखे व्हा आणि आपली नजर सीतेच्या चरणावरच ठेवा. त्यांच्यात काही पाप नव्हते. पण त्यांना हे ज्ञात होते की, नजर वर उचलून बघणे म्हणजे आपले चित्त बिघडविणे आहे. म्हणून त्यांनी चरणाकडेच दृष्टी ठेवली गणेश तत्व आपल्याला पृथ्वी मातेकडून मिळाले आहे. धरणी भातेने आपल्याला गणेश तत्व दिले आहे. म्हणून आपण पृथ्वीचे अनेक आभार मानू या, कारण त्यांनी हे तत्व देऊन आम्हाला दिशाचे ज्ञान दिले आहे. जेव्हा मनुष्यामध्ये गणेश तत्व जागृत होते, तेव्हा त्याचे मध्ये विवेक बुद्धी येते. म्हणून श्री गणेशांना आपण प्रार्थना करतो की आम्हांला विवेक द्या, सद्बुद्धि द्या. मनुष्यामध्ये जर दिशाचे ज्ञान असेल तर फारसे बिघडणार नाही. पण त्याला चांगले वाईटाचे ज्ञान असणे आवश्यक आहे, म्हणून आपण त्यांचेकडे विवेकाची मागणी करतो, म्हणून त्यांना विवेक देणारे म्हणतात, हेच गणेश तत्व आहे.

आता आपले मध्ये दुसरे जे महत्त्वाचे तत्व आहे ते म्हणजे विष्णू तत्व होय विष्णू तत्वामुळे आमचेमध्ये धर्माची धारणा होते, जो आपल्यामध्ये असलेल्या नाभी चक्रातून प्रभावित होतो. आपल्या भोवती नाभी मध्ये धर्म असतो. जेव्हा तुम्ही आमीबा होता तेव्हा आपले अन्न शोधत होता. त्यांच्या पेक्षा उच्च दशेत आल्यावर मानवी अवस्थेत आल्यावर स्वतःच्या सत्तेच्या शोधात असता व त्याच्या वरच्या स्थितीत ईश्वराला शोधता. तुमच्या मधला धर्म हा की, तुम्ही ईश्वराला शोधा हा मनुष्य धर्म आहे. फक्त मानवच परमात्म्याला शोधत असतो प्राणी नाहीत. हा मनुष्याचा धर्म आहे. याचे दहा धर्म आहेत, व हे दहा धर्म आपल्याला श्री



विष्णू पासून मिळतात. श्री विष्णूकडून आपणास अनेक लाभ होतात. परंतु हे सत्य नाही. की त्यांचे कडून आपणास फक्त पैसाच मिळतो. अशा चुकीच्या कल्पना आपल्या मनात घर धरून बसल्या आहेत की, विष्णूकडून आपल्याला क्षेम मिळते. व बाकी त्यांत काही अर्थ नाही. विचार करा की, फक्त क्षेमाने काय फायदा होतो. जेव्हा मनुष्याला क्षेम मिळते, समता, एक स्थिती ह्या, एक मासा आहे. त्याच्या लक्षात आले की, समुद्रामुळे आपणसंतुष्ट आहोत, व त्यामुळे त्याला समाधान मिळते. तेव्हा असा विचार येतो की, समुद्रावर आपण पाहिला त्याचा धर्म आपल्याला समजला समुद्राचा धर्म आपल्याला समजला. आता हे जमीनीचा धर्म काय आहे. ते बघायचे आहे. तेव्हा तो पुढे होते. मत्स्यावतार जो झाला तो ह्या साठीच एक मासा समुद्रातून बाहेर आला. तेव्हा तो मासा बाहेर आला फक्त एकच मासा जो प्रथमच बाहेर आला त्याला आपण अवतार मानतो. जो पहिल्यांदा बाहेर आला व आपल्या बरोबर इतर माशांना बाहेर आणले. काय शिकण्यासाठी? की धर्म काय आहे कोणता धर्म? जमीनीचा धर्म काय आहे? म्हणून ते मासे बाहेर आले. त्यांच्यात आता दुसरा धर्म शिकण्याची इच्छा निर्माण झाली. आधी पाण्याचा धर्म शिकले व नंतर जमिनीचा धर्म शिकू लागले. जेव्हा जमिनीचा धर्म शिकू लागले तेव्हा सरपटतांना त्यांना असे समजले की, जमिनीवर वृक्ष आहेत व वृक्षांची पाने सुद्धा आपण खाऊ शकतो. सर्वात प्रथम भूक असते व त्याचेसाठी मनुष्य शोधात असतो. शोधण्याची शक्ती सर्वात प्रथम नाभीमध्ये असते कारण तेथे भूक असते.

प्राणी झाल्यावर त्याला वाटले की, मान वर करून चालावे फार मान झुकवून चाललो आता. वर करून चालावे. जेव्हा त्याने वर उचलली तेव्हा मनुष्य बनला. हळू हळू तो माणूस बनला. तर आपल्या आत धर्म आहेत. व आपण धर्म धारण करित असतो. प्रथम माशाचा धर्म होता. व त्यामुळे तो पाण्यांत पोहत होता. नंतर कासवाचा धर्म होता की, तो जमीनीवर सरपटत होता. नंतर जे प्राणी आले त्यांचा धर्म होता की चार पायाने चालावे पण त्यांची मान झुकलेली असे. नंतर घोड्या सारखी त्यांनी मान वर उचलली. व त्यानंतर सर्व शरिरच उभे केले व मागचे दोन पायावर ते उभे राहिले. हा मनुष्याचा धर्म आहे. की, तो दोन पायावर उभा आहे. व त्याची मान सरळ आहे. हे तर बाह्योत आले. अतिशय

स्थूल स्वरूप, व तुम्हाला ते कळले. परंतु तत्वाचे बाबतीत कोणतेही काम जेव्हा माणूस करतो तेव्हा त्याचे कार्य तत्वाचे उजळून निघाले पाहिजे. समजा आपण येथे बोलतो आहोत (Microphone) याचे माध्यमातून व आम्ही काय बोलत आहोत. ते तुम्हाला कळते आहे. पण या पेक्षाही जास्त चांगली गोष्ट आली तर ती यंत्रणा जी काम करित असेल, नवीनच असेल. तसेच माणसामधील जे तत्व आहे ते एक नवीन विकसित तत्व आहे. आणि ते तत्व जे आहे ते परमात्म्याला शोधणे. त्यांचेच ते तत्व असल्यामुळे तो ईश्वराला शोधत असतो. म्हणून मनुष्याचे प्रथम तत्व आहे की, परमेश्वराला शोधणे जो मनुष्य परमेश्वराला शोधत नाही तो पशु पेक्षाही खालचा आहे, मनुष्य जेव्हा परमेश्वराला शोधण्यास निघाला तेव्हा त्याचे नाभी चक्रातील तत्व पूर्ण झाले. आता तो पुढच्या तत्वावर आला. जेव्हा तो परमात्म्याला शोधू लागला तेव्हा त्याने बघितले की, जगात सर्व सृष्टी बहरलेली आहे. कदाचित ह्या ग्रहांवर ताऱ्यांवर आणि सर्व ठिकाणी ईश्वर असेल. त्याचेकडे त्याची दृष्टी गेली. तेव्हा त्याला हिरण्य गर्भाची स्मृति आली. त्यानी वेद लिहिले त्याचे चित्त अग्नी वगैरे पाच तत्वाकडे गेले त्यांना समजून घेण्याचा त्याने प्रयत्न केला. ते समजावून घेतल्यावर हवन वगैरे केले आणि ब्रम्हदेव, सरस्वतीची पूजा केली. हे सर्व झाल्यावर त्यांना वाटले की, आता, हे सर्व ज्ञान मिळाले. जसं विज्ञानामध्ये लोकांना सर्वच समजले, बरेच काही समजले. पण जेव्हा विज्ञानाचा परिणाम समजला तेव्हा ते म्हणाले की, हे काय आपण तर अणूबाँब बनविला. आता हे विज्ञानवाले लोक अशा ठिकाणी उभे आहेत की, येथून पुढे गेल्यास खाईच आहे. ह्या पुढे एक पाऊल जरी गेले तरी एक क्षणात सर्व जग नष्ट होईल. आता, त्यांनी पुस्तके लिहिली आहेत. ती तुम्ही बघितलीस, तर एक आहे Shock ह्या विषयावर, म्हणजे केवढा मोठा धक्का आहे. आणि जगातील लोक अज्ञानांत बसून आहेत आणि म्हणून आम्ही दुःखी आहोत. जसं फ्रान्स मधील लोक नेहमी चेहरे पाडून असतात. मी विचारले काय झाले तर हे लोक म्हणाले की, माताजी “ह्या लोकांना जर आपण सांगितलं की, आपण आनंदी आहोत आपणसुखी आहोत तर ते म्हणतील तुमच्या सारखा जास्त मूर्ख दुसरा नसेल. ह्या जगांत काय चालू आहे ते तुम्हांला माहित नाही. “तेव्हा मी म्हणाले असं का? कारण हे म्हणतात



की, आम्ही लिहित वाचत असतो, आणि आम्ही अशी पुस्तके वाचली आहेत आणि त्याच्या वरून असं समजतं की, ह्या जगावर फार मोठे संकट येणार आणि आणि सारे जग नष्ट होणार आहे. माणसांनी स्वतःला एका मिनिटाच्या आत नष्ट करण्याची पूर्ण तयारी केली आहे. आणि हे फारच मोठं संकट आहे आणि तुम्ही सुखात." त्यांचा विश्वासच बसत नाही. मी म्हणाले, "म्हणून हे लोक दारु पितात की, काय, कारण फारच दुःखी जीव आहेत. फारच दुःखी आहेत म्हणून चेहरा पाडतात. मग दारु कां पितात? असंही असेल की, आपले दुःख कमी करत आहे." ते म्हणाले होय हेच लक्षांत घ्या माताजी की, ते दुःख कमी करत आहेत. परंतु प्रत्येक चौकात पॅरिसच्या प्रत्येक चौकात तुम्हाला एक घाणेरडी बाई उभी असलेली दिसेल. ती कशा करिता? मी म्हणाले की, माणसाने स्वतः करिता एक नाटक रचून ठेवलेले आहे. की, मी फारच दुःखी आहे म्हणून मला दारुही प्यायला पाहिजे व पाप करायला पाहिजे. जर मी दारु प्यालो नाही तर माझे दुःख कसे हलके होईल अशा तऱ्हेने मुर्खासारखे ते बडबडतात. तात्पर्य हे की, परमात्म्याचा शोध हेच जर तत्व आहे तर हे तुमच्या लक्षात येईल की, विज्ञानाच्या रस्त्याने जावून परमात्मा भेटू शकणार नाही. विज्ञानाच्या रस्त्याने जाऊन जे काही तुम्ही मिळविले आहे. जे काही ज्ञान तुम्ही मिळविले आहे. त्याने कोणालाच आनंद मिळालेला नाही. अर्थात आदी पेक्षा तुम्ही जास्त आळशी झाला अहांत हे नक्की आता तुम्हाला चालता येत नाही. इंग्लंड मध्ये जर तुम्ही एखाद्या दुकानांत गेलात आणि एखाद्याला सांगितले की, दोन चार सहाचा गुणाकार कर तर ते काही त्याला येणार नाही. त्यांना कॉम्प्युटर लागले. त्या शिवाय त्याचे चालत नाही. आणि तो जर हरविला तर त्याचे डोके गेले कामातून आधी अतिविचारामुळे त्याचे हात निरुपयोगी झाले. कोणतेही कशदा काढण्याचे काम किंवा स्वैपाक करण्याचे काम वगैरे ते करू शकत नाहीत. आता जेव्हा त्याचे डोके जास्त घालू लागले तेव्हा यंत्र बनविले आणि त्या यंत्रात आपले डोके घातले. आता जेव्हा यंत्र आले तेव्हा डोके निरुपयोगी झाले. आता यंत्रच त्याचे सर्वस्वी झाले आहे. त्याचे शिवाय ते काहीच करू शकत नाहीत. जर तिथे वीज बंद झाली तर लोक आत्महत्या करतील. ईश्वराच्या कृपेने आपल्या येथे अजून ठीक आहे. वीज जाण्याची लोकांना सवय आहे.

तिकडे लोक काळजीत असतात की, वीज जाते की काय, अमेरिकेत एकदा वीज गेली तर कितीतरी अपघात झाले, संकटे आली किती त्रास झाला, लोकांना जणू काही तुफान उठले. भूकंप झाल्यावर सुद्धा इतके संकट आले नसेल इतके वीज गेल्यावर आले. ते एक मोठे नाटकच झालं. इतक्या टोकापर्यंत त्यांनी स्वतःला गुलाम बनवून ठेवले आहे. आता त्यांना वाटू लागले आहे की, प्लास्टिकचे डोंगर उभे केले आहेत आणि आता ह्या प्लॅस्टिकचे काय करायचे? आता ते नष्ट कसे करायचे? ह्या मागे लागले आहेत. आणि आता डोके धरून बसले आहेत. एखाद्या घरांत तुम्ही गेलात तर न जाणे तुम्हांला किती प्लॅस्टिकच्या गोष्टी दिसतील भारतीय लोकांना हे वेड लागत आहे. आताच मला सुद्धा ते सांगतात की, विलायतेतून येताना नायलॉनची साडी आणा. अरे येथे इतक्या सुंदर कॉटन (सुती) च्या रेशमी साड्या मिळतात. कां तुम्हीच नायलॉनच्या साड्या नेसतां? पण आमच्या लोकांना नायलॉनचा शोक आला आहे आपल्याला प्लॅस्टिकचा शोक आहे. तिकडच्या लोकांचा विश्वास बसणार नाही इतके आपण मूर्ख आहोत. तिकडे तर लोक कॉटनला भगवान समजतात. कारण त्यांना ते मिळतच नाही. आधी त्यांनी खूप कॉटनचे कपडे बनविले.

समजा, त्यांच्या घरी दारु असते तर घरांत दहा प्रकारचे ग्लास असतील; ह्याच्या करिता एक ग्लास, त्याच्या करिता तो ग्लास आणखी कशा करिता तिसरा ग्लास वगैरे जेवायला बसतील तर एका पदार्थाला एक चमचा दुसऱ्याला दुसरा, तिसऱ्याला तिसरा. ह्या पदार्थासाठी एक प्लेट, त्या पदार्थासाठी दुसरी प्लेट आणि कशाला तरी तिसरी प्लेट. एक ताट घ्या आणि हातानी खा, पन्नास प्रकारचे ग्लास, पन्नास प्रकारचे चमचे, पन्नास प्रकारची भांडी, करायचेत काय? आतां परिस्थिती अशी आली आहे की, सर्व काही बाहेर काढले. त्यांनी पृथ्वीमातेच्या पोटात जे काही तत्व आहे ते बाहेर काढले आणि रिकामे झाले. आता कामात खातात सकाळपासून संध्याकाळी पर्यंत कागदात खातात आमचे एक नातेवाईक तिकडे अमेरिकेला गेले होते. बिचारे जुन्या वळणाचे होते. म्हणाले मी तर कंटाळलो. रोज सहूल करून, माझी तब्येत खराब झाली. जेव्हा बघावे तेव्हा प्लॅस्टिकची प्लेट नाहीतर कागदाची प्लेट त्यांच्या घरी ही परिस्थिती आहे



आणि आपण म्हणतो की, ते श्रीमंत आहेत, पैसेवाले आहेत. प्लॅस्टिकशिवाय त्याचे घरी काय आहे? प्लॅस्टिकमध्ये जेवायचे प्लॅस्टिकमध्येच रहावयाचे प्लॅस्टिकमध्ये मरायचे. त्यांच्या घरी आता अशी अवस्था आहे. हॉटेल मध्ये राहिले आणि हॉटेल मध्ये मेले ते एखाद्या भटक्या लोकांसारखे झाले आहेत. त्यांचे सगळे संपुष्टात आले आहे. इतक्या त्यांच्या चुका झाल्या आहेत. ह्या शास्त्रवाल्यांच्या कोणत्याही गोष्टीवर जर मी बोलू लागले. तर हसून हसून पोट दुखू लागेल. वैद्यकीय शास्त्रांत असे आहे, काय झाले आहे? काही नाही जरा नीट बघा. आताच एक साहेब सांगत होते की, ते ज्यांनी दात घासतात त्या टूथपेस्ट मध्ये क्लोरोफॉर्म मिसळलेला असतो. क्लोरोफॉर्म मिसळल्या मुळे लोकांना आता कॅन्सर होऊ लागला आहे. तेव्हा एकजण म्हणाला की, भारतातून नीम पेस्ट मागवा त्याच्यात क्लोरोफॉर्म नसतो. मी म्हणाले ते चांगले आहे. क्लोरोफॉर्म महाग आहे तो आम्ही काढून पाठविणार? आम्ही नाही ते घालू शकत आतां येथून वस्तू निर्यात होवू लागतील. हाताला ते लोक जो साबण लावतात त्यांच्यात काही रसायने घालतात. तो काही अस्सल साबण नसतो. थोडे दिवसांनी बघा भारतातील साबण साऱ्या जगभर पाठविला जाईल, कारण हिंदुस्तानचा साबण शुद्ध असतो. तो तत्वावर बनविला जातो. कोणत्याही कृत्रिमतेवर नाही. त्यांचे कडील सर्व कृत्रीम असते. मी कोणतीही विदेशी वस्तू वापरीत नाही. त्यांचेकडे सेंट्स असतात. त्यात तंबाखू असते. बाकी काही नाही कारण तंबाखू थोडी थोडी चढत जाते व माणूस ती वापरीत जातो. आणि त्याला वाटते की, मी फार मोठा आहे. मी तंबाखू वापरतो. त्यांचे सेंट्स तंबाखूच्या पाण्यापासून बनवितात. आपल्याकडची अत्तरे अस्सल असतात. तर त्यांच्याकडची सगळी रसायने असतात. तिकडे इतक्या कृत्रीम गोष्टी वापरतात व त्यामुळे कोणाच्या भुवया गळून पडतात, तर कोणाचे तरुणपणातच केस गळून पडतात, तर कोणाला दाढीच नसते. नंतर कळले की, हे लोक असल्या गोष्टी वापरतात त्यामुळे त्यांना हे सर्व होऊ लागले आहे. तिकडे सरदार लोकांची परिस्थिती बिकट आहे, व ते लोक जास्त दारु पिऊ लागले तर आणखी बिकट होईल.

तर सांगण्याचे तात्पर्य असे की, तत्व न जाणल्यामुळे लोक कृत्रीम गोष्टीकडे वळतात, पंचमहाभूते तत्वे मानून सुद्धा

आपण जडातच अडकून बसतो कारण जडता हे काही तत्त्व नाही, सर्व पंचमहाभूतांचे तत्त्व ब्रम्ह आहे आणि आत्मा मिळविल्यावर ब्रम्ह तत्त्व आपल्यामधून वाहू लागते. ते तत्त्व सोडून आपण इतरच शोधत बसलो व जेथे तत्त्व बिलकूल नसून सर्व जडच आहे अशा स्तरावर येऊन पोहोचलो त्यामुळे त्या देशामध्ये अशी परिस्थिती आता आली आहे की, तेथे कोणीही खूप नाही सर्व शास्त्रे मिळविली. खूप शिकले व विद्वान बनले पण आता अशा टोकावर उभे आहेत की, एक जरी पाऊल पुढे टाकले तरी सर्व खड्यात जातात. म्हणून सर्व लोक तिकडे दुःखी आहेत, विमनस्क आहेत व इतके त्रासलेले आहेत की, फार थोडे लोक तिकडे असे आहेत की, ज्यांचे शरिराचा कोणताही भाग हालत नाही, कोणाचे डोळे फडफडतात कोणाचे नाक हलते, कोणाचे डोळे वाकडे असते. शांत असे काहीही नसते. बायका नवऱ्यांना मारतात, नवरे बायकांना मारतात, मुलांना मारत असतात, आई बापांना मारतात, दर आठवड्यांत कमीत कमी दोन मुले आई बापाकडून मारली जातात, कधी ऐकलय? अगदी ठार मारतात, ही तेथील आकडेवारी आहे. अगदी नाही तरी दोन मरतातच. आणि ते सुद्धा आई - वडिलांचे हातून, तेव्हा अशा तऱ्हेची संस्कृती जेथे तयार झाली आहे. तेथे हे लक्षात घेतले पाहिजे की, त्यांना तत्त्व माहीत नाही. जर तत्त्व त्यांना ठाऊक असते तर त्यांची आज ही स्थिती नसती. कारण तत्त्व आनंददायी असते. आणि त्यांनी तत्त्वच सोडून दिले. तेव्हा ब्रम्हदेवाचे तत्त्व सुद्धा घालविले.

आतां आपल्या देशामध्ये आपण म्हणतो ब्रम्ह निराकार आहे व तेथे पोहोचले पाहिजे. वेदामध्ये हे लिहिले आहे ते लिहिले आहे व त्याच्याच आपणा आग्रह धरून बसतो. परंतु वेदांतच हे लिहिले आहे की वेद. म्हणजे विद म्हणजे जाणणे. जर सर्व वेद वाचून सुद्धा मनुष्याने जर 'स्व' ला जाणले नाहीतर वेदाचा उपयोग काय? हे जर खर आहे, तर प्रथम हे आहे की, वेद पठण करून तुम्हांला आत्मज्ञान होत नाही. त्याचे पठणाने बाकी सर्व होईल पण आत्मज्ञान नाही होऊ शकत. गायत्री मंत्र आहे. सर्व लोक गायत्री जप करीत असतात. अगदी पुष्कळ करतात, पण अशा बडबडण्याने गायत्री देवी जागृत होणार आहे का? कोणाची झाली आहे कां? असे कोणी भेटले आहे कां? गायत्री जप का करायचा



ते सुद्धा तुम्हाला माहीत नाही? गायत्रीला जागृत करण्याचे आधी आपल्या आत्म्याला जागृत करणे आवश्यक आहे. गायत्री परमात्म्याची एक शांती आहे. जो पर्यंत परमात्म्याला तुम्ही जाणत नाही तो पर्यंत गायत्री जप करुन काय होणार? समजा तुमच्यावर पंतप्रधान नाराज आहेत. तेव्हा तुम्ही दुसऱ्या कोणसही प्रसन्न करुन घेतले तरी त्याचा उपयोग काय होणार? तुम्हास कोणीही वाचवू शकत नाही. जो पर्यंत तुम्हाला ईश्वर मिळत नाही तोपर्यंत या सर्व शक्ती व्यर्थ आहेत. त्याचा अर्थ एवढाच. फक्त आत्म्याच तत्त्व आहे. तो मिळविला जाहिजे. या शक्ति मिळवून तुम्ही परमात्मा मिळवू शकत नाही. परंतु परमेश्वर प्राप्ती नंतर या शक्तीची तत्वे तुम्हाला मिळतात. तेव्हा या शक्तीचे वर जी शक्ती आहे तिकडे आपल्याला लक्ष दिले पाहिजे. याचे वर जी शक्ति असते तिला देवी शक्ति म्हणतात. ती आपल्या हृदय चक्रांत असते. हृदय चक्राचा अर्थ हृदय नाही. हे दुसरे तत्त्व आहे. ज्याला हृदय चक्राचे तत्त्व म्हणावे लागेल. ते दवी तत्त्व आहे. आता आपल्यामध्ये देवी तत्त्व काय आहे? जेव्हा हे खराब झाल्यास नुकसान होते ते समजावून घ्या. देवी तत्वामुळे आमचे मध्ये सुरक्षितपणा प्रस्थापित होतो या तत्वामुळे आपण सुरक्षित होतो. मूल १२ वर्षांचे होईपर्यंत देवी तत्वामुळे, आपल्या sternum मध्ये (छातीच्या मधोमध असलेले हाड) सैनिक बनतात, त्यांना Anti bodies असे म्हणतात. व त्या सर्व शरीरभर पसरतात. व तुमचेवर कोणताही हल्ला आल्यास (रोगाचा) त्याला थांबविण्यासाठी तयार रहातात. एखाद्या व्यक्तीच्या सुरक्षितपणाचे भावनेवर काही कारणामुळे परिणाम झाल्यास हे चक्र पकडले जाते. काही दिवसापूर्वीचे मी सांगितले होते की, स्त्रियांमध्ये अनेक कारणामुळे सुरक्षितपणाची भावना फार लवकर कमी होते, जसे एक स्त्री चांगली सद्गुणी आहे. पण तिच्या पतीने तिचे संरक्षण केले नाही किंवा तिच्या पतीवर संशय आले किंवा तो दुसऱ्या स्त्री बरोबर संबंध ठेवीत आहे, तर तिचे हे चक्र पकडले जाते, अशा वेळी पुरुषाने तिला रागाविण्याऐवजी तिचे हे चक्र ठीक केले पाहिजे, व त्यासाठी तिला हे समजाविले पाहिजे की तुझ्याशिवाय मला दुसरे जास्त प्रिय काही नाही. त्याने कशा प्रकारे पत्नीला सुरक्षित वाटेल याचा विचार केला पाहिजे. तिचेवर रागावता कामा नये तो जर तिला म्हणू लागला की तू कोण विचारणार तू फारच संशयी आहेस, जा आपल्या

वडिलांच्या घरी, तर तिचा सुरक्षितपणा संपला. नवऱ्याला विशेषतः भारतातील नवऱ्यांना असे वाटते की, त्यांनी काहीही केले तरी ठीकच आहे. ते कधी पाप करीत नाहीत सर्व पवित्र्याचा ठेका स्त्रियांनीच घेतला आहे. पुरुषांना त्यांची काही आवश्यकता नाही. आपल्याकडे पुरुषांचा साधारणपणे असा विचार असतो. याचा इलाज करण्याच्या सुद्धा काही पद्धती आहेत. इंग्लंडमध्ये तुम्ही जा, तेथे सर्व नवरे हमाल झाले आहेत हमाल! सकाळपासून संध्याकाळपर्यंत गाढवासारखे काम करतात. घरी आल्यावर बायकोने जर घटस्फोट घेतला तर त्याचे घरादाराची विक्री होते. अर्धी मालमत्ता पत्नीची बनते. एखाद्या पुरुषाने जर दोन-तीन वेळा असे केले अथवा त्याचे बाबतीत असे झाले, तर तो अगदी रस्त्यावर येतो. तो दारु पिऊन मरणार व त्याची बायको दोन-तीन लग्ने करुन खूप श्रीमंत होणार तेव्हा हा जो बाह्यातील उपाय तत्वमधून नाही तर बाह्यातून होतो, तेव्हा पुरुष विचारे, तुमचा विश्वास बसणार नाही पण पुरुष बायकांचे मागे मागे फिरत असतात. ती नवऱ्याला हुकूम सोडत असते. (भांडी घासा, अशी भांडी घासतात कां? केर काढा, कसा काढायचा केर। तुमच्या आईने शिकविले नाही का तुम्हाला। आश्चर्य वाटते पण मी डोळ्यांनी बघितले आहे. त्याला अंधरुणे काढावी लागतात. सर्व स्वच्छता करावी लागते. चार माणसामधून सुद्धा त्याला उठवून काम करायला लावले जाते. थोडेसी जरी अस्वच्छ झाले तरी त्याला उठवून साफ करावयास सांगतात. म्हणून विलायतेमध्ये स्वैपाक घर फारच विकसीत झाले आहे. कारण पुरुषांना सांभाळावे लागते. येथे चुली समोर बसावे लागले म्हणजे कळेल. आपल्याकडे पुरुषांना काहीही काम करता येत नाही. कोणतेही काम असो त्यांना वाटते काय जरूर आहे काम करण्याची? एखादी वस्तू दुरुस्त करायचे असेल अथवा दुसरे काही काम असो. त्यांना त्यांचेशी काहीही कर्तव्य नाही. परदेशात गेल्यावर त्यांना कळते त्यांना स्वैपाक करता येत नाही. भांडी धुता येत नाही. केर काढता येत नाही काहीच करता येत नाही व तिकडे नोकर मिळत नाही. विशेषतः विद्यार्थ्यांचे फार अडते, कारण त्यांचे हात खराब होतात. मग म्हणतात आईची फार आठवण येते, कारण येथे आम्हाला चांगले खावयास मिळत नाही. मी विचारले की स्वतः का बनवत नाही, तर म्हणाले की, आम्हाला काहीच येत नाही. पुरुष झाले म्हणजे आळशी



वनले आहेत. त्यांना काही करायचे नाही नुकतेच एक मोठे Secretary साहेब भेटले. शिक्षण खात्याचे सचिव. त्यांचे बोलणे ऐकून मोठे आश्चर्य वाटले. ते म्हणाले दहा वर्षांत भारतात सर्व ठिकाणी स्त्रीया दिसतील व पुरुष सगळे झाडू मारायला लागतील. मी विचारले का? तेव्हा ते म्हणाले की, विद्यार्थी म्हणजे मुले इतकी आळशी आहेत व त्यांचे नेते गुंडगिरी करतात. दहा-दहा वर्ष एका वर्गात बसतात. मी म्हणाले म्हणूनच आपल्या देशात असे दृश्य दिसते आहे व मुलींमध्ये मात्र स्वभावनेने चांगली आहेत जिच्याकडे काही विवेक आहे अशी मुलगी नेता होते. मुलींना काही समजावून सांगा, त्या समजावून घेतील. मुलांना सांगा ते काठ्या घेवून तयार आहेत। व त्यांचे नेते इतके वाईट आहेत की, त्यांचेशी बोलणे शक्यच नाही मुलींना दिवसभर सासरी कसे वागायचे ते शिकवायचे व मुलांना सांगायचे की सासुरवाडीला गेलास तर मोटार जरूर माग. अशा तऱ्हेने कोणत्याही व्यवस्थेमध्ये आपण त्यामागचे तत्व काय आहे ते बघत नाही व त्याचे तत्वाप्रमाणे आपण इलाज करत नाही. व त्यामुळे आपल्यात फार मोठे दोष निर्माण होतात. म्हणून विवाहामागचे तत्व पाहिले पाहिजे. व ते म्हणजे आपली पत्नी आहे. आपल्याकडे असे सांगावे लागते, तर तिकडे पुरुषांना असुरक्षित वाटते. म्हणून तेथे स्त्रीयांचे हे चक्र जर खराब झाले तर त्यांना (Breast cancer) स्तनाचा कॅन्सर होण्याची शक्यता असते. जास्त करून हा आजार असुरक्षित वाटल्यामुळेच होतो. तो ठीक करायचा असेल तर तिच्या नवऱ्याला सांगा की, बायकोचे नोट संरक्षण कर. पण ते माझे ऐकणार नाहीत व डॉक्टर हा आजार ठीक करू शकत नाहीत, ते सांगणार. ऑपरेशन करा, कॅन्सर आला आहे. हे कापा ते कापा नाक कापा, कान कापा, कॅन्सर झालेल्या व्यक्तीचे अर्धे अवयव कापलेलेच असणार व थोड्याशा अवयवावरच तो आपले काम चालवितो. सहज योग असा नाही. सहज योगात तत्वावर काम चालते. कोणते तत्व खराब आहे ते पहायचे व ठीक करायचे.

आता, नाभी चक्राच्या चारही बाजूला जी महान तत्वे आपल्यामध्ये आहेत. ज्यांना धर्म तत्वे म्हणावे लागेल व त्या धर्म तत्वांना सांभाळणारे जे तत्व आहे. जे त्यांचा आधार आहे. जे ज्यांना मार्गदर्शन करते, ते आहे गुरु तत्व ते गुरु

तत्व जर खराब झाले तर कॅन्सरचा आजार फार लवकर होतो. कॅन्सर होण्याचा सर्वात सोपा मार्ग म्हणजे एखाद्या वाईट गुरुकडे जावे, पाच वर्षांत कॅन्सर नाही झाला तर बघा. दहा वर्षे झाली मी त्यांची नावे सांगत आहे की, ते कसे गुरु घरात आहेत. ते तुमचे नुकसान करतील तर ते मलाच सांगतात की, माताजी तुम्ही असे म्हणू नका तुम्हाला ते गोळ्या घालतील, मी म्हणाले ज्याची हिंमत असेल त्याने चालवावी बंदूक. त्यांची नावे सुद्धा सांगितली. पण त्यांचेकडे लोक गेले व हृदय विकार घेऊन परत आले. पण कृपा करून हृदय विकार नाही दिला तर वेड लावले अथवा (Epilapsy) (अपस्मार) चा आजार दिला एवढ्यावरच जर त्यांचे समाधान झाले नाही तर कॅन्सर देतील कारण तुम्ही त्यांना पैसे देणार तेव्हा काही तरी त्यांनी तुम्हाला द्यायलाच हवे. इतकी त्यांची सेवा केली खिसे भरले तेव्हा काही तरी तुम्हाला मिळलेच पाहिजे गुरु तत्व खराब झाल्यावर कितीतरी प्रकारचे कॅन्सर माणसाला होतात, आपली जी मूर्धा आहे ती कोणा समोर ही चुकवायची नाही प्रत्येकासमोर डोके टेकवायची काय आवश्यकता आहे? आपल्या आई - वडिलासमोर जरूर टेकवा पण एखाद्याला गुरू मानून त्याच्यासमोर माथा टेकविण्याची जरूर नाही. जो परमात्म्याची भेट घडवील तो गुरु.

माझे यांचे उलट आहे. मी लोकांना सांगते की, माझे पाया पडू नका तर सहा हजार लोक माझे पायावर डोकी आपटतात, व व्हायब्रशन्समुळे माझे पाय सुजतात. मी सांगितले तर राग येतो. माताजी दर्शन घेऊ देत नाहीत, असे म्हणतात. लोकांना ही एक सवयच लागली आहे. कोणी श्रीमान १०८,४२० वगैरे आले की, त्यांना साष्टांग नमस्कार घालायचा व चक्कर येवून पडायचे. गुरुनी आम्हांला आशीर्वाद दिला व चक्कर येवून आम्ही पडलो व पाच दहा वर्षांत वेड्याचे हॉस्पिटलमध्ये लोग हा विचारच करीत नाहीत की या माणसाने गुरु केला आहे, तर त्याची प्रकृती तरी कमीतकमी ठीक रहावी. याचे तरी बरे असावे. पण हजारो लाखों लोक त्याचे कडे जातात. "तुमचे गुरु काय करतात." सातव्या मजल्यावर बसले आहेत. बोलत नाहीत मौनी बाब आहेत ना ते." काय बोलणार? डोक्यात काही असेल तर बोलतील ते मौनी बाब आहेत. बोलणार नाहीत.



जवळ गेलात तर चिमटा मारतील चिमट्याचा मार खायला लोक शंभर रुपये देतील. कारण मौनी बाब आहेत. जितका ते देखावा करतील तेवढे चांगले प्रत्येक गुरु काही नवीन दिखावटी पणा काढतो. असे एका गुरुने सांगितले की, तुम्हांला हवेत उडायला शिकवणे. मुलांना तरी पुष्कळ समजते पण मोठ्यांचे डोक्यांत काहीच शिरत नाही. या लोकांनी तीन, तीन हजार पौंड घेतले आहेत. तीन तीन हजार विचार करा. “लोकांना उडायला शिकविणार.” मी म्हणाले दुदैव लोकांना तुमच्या गुरुनांच का नाही उडवून दाखवायला सांगत? प्रथम त्यांना उडायला सांगावचे व मग पैसे द्यावचे. बिचाऱ्यांना खाण्यासाठी आधी बटाटे उकडले व उकडून त्याचे पाणी तीन दिवस प्यायला दिले. म्हणजे उडण्यासाठी तुमचे वजन कमी करायला हवे. त्यासाठी तीन हजार पौंड म्हणजे उडण्यासाठी तुमचे वजन कमी करायला हवे. त्यासाठी तीन हजार पौंड म्हणजे जवळ जवळ साठ हजार रुपये. त्यानंतर बटाट्याच्या साली खायला दिल्या. सगळ्यांना सांगितले तुमचे वजन वाढता कामा नये. शेवटी जे सडलेले बटाटे होते ते खायला दिले त्यांना (diarrhoea) झाला तर म्हणाले हे होणे आवश्यक आहे. त्यामुळे तुमचे वजन घटले. मग थोडे दिवस उलट टांगले व तसेच ठेवले, का तर वजन घटले पाहिजे. त्यानंतर (Foam) वर ठेवले व उड्या मारायला लावले. घोड्यावरून उड्या मारतात तसे. व फोटो काढले वर्तमान पत्रांत छापून दिले. फोटो की आम्ही हवेत चालतो आहोत. अगदी खोटे साफ खोटे तुमच्या मोटारी आहेत, गाड्या आहेत, त्यातून हिंड, तुम्ही जर हवेतून असे तसे चालाल तर कोठे तरी आदळाल विचार करा, की त्याची काय आवश्यकता आहे. आता माणसाला पक्षी होण्याची आवश्यकता आहे की, काही विशेष, म्हणजे परम व्हावयास हवे. आपल्या गुरु तत्वाची दया आली पाहिजे. आपली अक्कल गहाण टाकतात व त्या मूर्खाकडे जाऊन स्वतःचे गुरु तत्व खराब करून घेतात. एवढा सरळ विचार करित नाहीत.

एका ग्रहस्थाने विचारले “माझ्या कर्मगतीचे काय?” मी म्हणाले. “तुमचे गुरु काय म्हणतात?” म्हणाले “माझ्या गुरुने सांगितले आहे की, तुझ्या पापाचा फक्त १/६८ इतकाच भाग मी खाऊ शकतो. “मी विचारले” ते कोणत्या हिशेबाने आणि बाकी कोण खाणार? याचा अर्थ अजून सदुसष्ट गुरु

तुम्हांला शोघायला हवेत. म्हणजे तुम्ही सुटणार बाकी कोण खाणार? ते कोणत्या दुकानात मिळतात? यानी तर आपला हिस्सा घेतला व दुसऱ्याची शिफारस केली. डॉक्टर लोक करतात तसे एखाद्याच्याकडे तुम्ही जावून म्हणलात की माझे डोळे खराब आहेत. तर ते म्हणनार आधी जाऊन दात तपासून घ्या. मग तुमचे सगळे दात काढून टाकतील व सांगतील की डोळे तपासून घ्या. त्याच्यात बहुतेक फोड झाला आहे. सगळे करून झाले आणि लक्षात आले की आपल्याला काही झालेच नाही. अशी या लोकांची पद्धत आहे. ही सर्व यांची विभागणी आहे. हे म्हणाले की, आम्ही इतकेच घेतो जास्त नाही. घेत राहिलेल्या साठी त्या गुरुचे धरी जा. दुसऱ्या गुरुने राहिलेला सर्व पैसा काढून घेतला आता असे कळते की, बिचारा पार रस्त्यावर आला आहे घर विकले बायका मुले तिसरीकडे भीक मागत आहेत.

आपण जेव्हा आपली अक्कल वापरीत नाही तेव्हा असल्या गुरुंचे घरी जात असतो. आपल्याला जर असे वाटते की, देवाच्या नावावर जे काय चालते ते देवाचेच काम असते तर ते अगदी चूक आहे. असे, आज एक बाईसाहेब तिकडे म्हणाल्या माताजी माझे गुरु फार मोठे पोचलेले गृहस्थ आहेत. यांत शंका नाही. आणि येथे बसून दिंडोरा पिटते आहे. की, मी गुरुला शरण गेले आहे. मी गुरुला शरण गेले आहे. तेव्हा मी विचारले मग काय झाले? तेव्हा म्हणाली माताजी मी पार झाले स्वतःचेच स्वतःला सर्टिफिकेट ! मग मी विचारले. “कशा पार झालात?” तर म्हणते गुरुला शरण गेल्यामुळे. मी पार झाले. “असे तर मला शरण येऊन सुद्धा होणार नाही. तुझे गुरु तर वारले. पण मी तुमच्या समोर बसली आहे. तुम्ही म्हणाला. माताजी मी तुम्हांला शरण आहे. मला पार करा. तर नाही होणार थोडे फार स्वतःचे भांडवल पण लागते व कुंडलिनी पण जागृत व्हावी लागते पार होणे आवश्यक आहे. पार होत नाही तोपर्यंत माताजी मी तुम्हांला शरण आले आहे. असे म्हणून काही उपयोग नाही. मी स्वच्छ सांगते, पार व्हावे लागते. मी शरण आलो म्हणजे सोपे आहे. पण काम मला करायचय, माझे हातून झाले पाहिजे. जोपर्यंत माझे हातून काम होत नाही, तोपर्यंत सर्व निरर्थकच आहे. मी स्पष्ट सांगते जो पार नाही तो नाही. आहे तो आहे यांत खोटे (Certificate) कोणी देऊ शकत नाही. तुम्ही माझ्याशी



भांडा, लढाई करा, काहीही करा मी काय करणार? नाही, तर नाही, झालात पार झालात. अगदी साधा सरळ हिशेब आहे. आम्ही प्रयत्न करू शकतो पण पार नाही. करू शकत. आम्ही प्रयत्न करू, प्रेम देऊ, सगळ काही करू पण पार तुमचे तुम्हांला झाले पाहिजे. जसे जेवण अगदी रुचकर जेवण मी बनविले पण तुम्हाला जर जिभ नसेल, तर मी तुम्हाला काय देणार, आणि तुम्हाला काय चव समजणार? तुमची जीभ जागृत झाली पाहिजे. तिला संवेदना झाली पाहिजे. की माताजी काय बनवून आपल्याला वाढले. तुम्हांला खाल्ले पाहिजे. का मीच तुमचे साठी खाऊ सुद्धा. तेव्हा हे जाणले पाहिजे की तत्व एकच आहे. व ते म्हणजे गुरु तुम्हांला परमात्म्याशी एकरूप करवितो जो परम मिळवून देतो तोच गुरु दुसरा कोणी गुरु नाही. सर्व आंधळे आहेत आणि एक आंधळा दुसऱ्या आंधळ्याला कोठे घेऊन जातोय ते फक्त देवच जाणे. शरणागतीने काही फरक पडत नाही. “शरणागती तर पार झाल्यावर सुरु होते. त्या पूर्वीची शरणागति काहीच नाही. तुम्ही पाहिले असेल की पार केल्याशिवाय मला कोणाला पायावर येऊ द्यायचे नसते. कारण त्यात काय अर्थ आहे. ? जर तुम्ही पारच झाला नाहीत तर मी काय करू? प्रथम पार होणे आवश्यक आहे. हे जरूर आहे की बरेच लोक पाण्यावर आल्यावरच पार होतात. ते ही ठीक आहे. पण त्यावेळी शरणागतिची काहीच आवश्यकता नाही. त्यानंतर शरणागत झाले पाहिजे. जेव्हा शरणागत व्हायचे त्यावेळी शरण जाण्यास कमीत कमी आत्ता तर पार जावयास हवे प्रकाश तर असावयास हवे. प्रकाश असल्याशिवाय तुम्ही माझे पण पायावर येऊ नका. कदाचित मी सुद्धा १०८,४३० वगैरे असेल, कोणास ठाऊक? आणि मी असले तरी तुम्हांस कसे समजणार की मी आहे अथवा नाही? मी काहीतरी कसे समजणार? केव्हाही, जोपर्यंत पार होत नाही. तोपर्यंत तुम्ही माझे पायावर येऊ नका म्हणून तुम्हाला कोणाचेही पुढे मस्तक झुकविण्यास प्रतिबंध केला होता. जो परमात्मा मिळवून देईल फक्त त्याचे पुढे मस्तक झुकवा ही घटना जोपर्यंत तुमचे मध्ये घटीत होत नाही. तोपर्यंत कोणत्याही तत्व हीन गोष्टीचा स्विकार तुम्ही करू नये म्हणून आपले जे संरक्षणाचे तत्व आहे त्या बद्दल मी तुम्हाला सांगितले. उद्या आणखी काही तत्वाबद्दल सांगेन. आज फार लांबलचक चर्चा केली. एका बाबतीत आज मला फार

समाधान वाटले. काल सगळे म्हणाले की, माताजी उद्या सिनेमा असल्याने (टी. व्ही.) वर कोणी येणार नाही प्रोग्रॅमला. माझे पति आज लंडनला चालले होते. पण त्यांना मी तशीच सोडून आले. विमान तळावर सोडण्यास गेले नाही. मी म्हटले काही लोक तरी नक्कीच येतील म्हणून जायला पाहिजे. म्हणून मी आले आणि म्हणून मला फार आनंद झाला की, तुम्ही तुमचा सिनेमा सोडून सुद्धा येथे आलात तुम्ही तत्वाला जास्त महत्त्व दिले म्हणून मी आज फार खूष आहे.

ईश्वराला कृपेने आपण आज सर्वजण पार व्हा म्हणजे उद्या फार मजा येईल. आणि उद्या सगळ्यांना घेऊन या. चित्तामध्ये Seriousness (गांभीर्य) येऊ नये म्हणून मी अतिशय हलके फुलके अशा तऱ्हेचे तुम्हांला समजाविले. पण याचा अर्थ असा नाही की, पोरकट पणाने वागले यांत गांभीर्य आहे. मला ती एक लीला आहे. ही सर्व लीला आहे. म्हणून अगदी शांत चित्ताने दोन्ही हात माझे समोर करा व चित्त अगदी मोकळे सोडा. तत्वाबद्दल मी तुम्हाला अगदी साध्या शब्दात, हलक्या फुलक्या पद्धतीने सांगितले. कारण तो अतिशय महान व गांभीर्य विषय आहे. व त्याची महनता व गांभीर्य तुमचेवर पसरावी, कारण महनताच मिळवायची गोष्ट आहे. ती मुळे मनुष्य दबला जात नाही वी वाहयला जात नाही. तर त्यामध्ये तो वृद्धिंगत होतो.

माझ्या मते बहुतेक सर्व लोक पार झाले आहेत. पार होते वेळी तुमच्या लक्षात येईल की हातावर थंड असा वारा जाणवतो. व आपण. निर्विचार होता स्वतःला निर्विचार ठेवण्याचा प्रयत्न करा. डोळे अगदी बंद ठेवा. थोडा वेळ आणि आनंद मिळवा. विषय गहन होता तरी सुद्धा तुम्ही पार झालात. मी आजपर्यंत तत्वाच्या विषयावर बोलले नव्हते. आज प्रथमच तत्वावर बोलले. अगदी गप्पा गोष्टी करीत तत्वाला प्राप्त करून घेतले पाहिजे.

हा अतिशय सूक्ष्म विषय आहे म्हणून सूक्ष्मांत जाऊन बघा तुमच्या हातावर थंड थंड हवा येऊ लागेल. हेच मिळवायचे आहे. हाच जीवनाचा उद्देश आहे. या ब्रम्हत्वाला प्राप्त व्हायचे आहे. ते आत्म्याचे तत्व आहे ते आपल्या मधून लहरी सारखे, लहरी सारखे वहात आहे. ते आत्म्याचे तत्व ब्रम्ह तत्व आहे.